ऋग्वेद　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　यजुर्वेद

ओ३म्

पाखण्ड खण्डन विशेषांक

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 15 (मासिक)
₹ 150 (वार्षिक)

वर्ष : 28　ज्येष्ठ-आषाढ़　वि0स0 2073　जून 2016　अंक : 06

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून　　　　　　　　　　　　　　　　वजन: 50 ग्राम

महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन का उद्घाटन
एवं
स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह

वैदिक साधन आश्रम तपोवन,
नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

दिनांक 15 मई 2016 को महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश का तपोवन आश्रम देहरादून आगमन : समाचार पत्रों की दृष्टि मे...

पाखंड से बचाएंगे स्वामी दयानंद के विचार

अमर उजाला ब्यूरो

- तपोवन स्थित वैदिक साधन आश्रम में मनाया गया स्वामी दीक्षानंद स्मृति दिवस
- हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने किया सत्संग भवन

देहरादून। तपोवन स्थित वैदिक साधन आश्रम में स्वामी दीक्षानंद स्मृति दिवस मनाया गया। इस मौके पर हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने आश्रम में नवनिर्मित प्रभु आश्रित सत्संग भवन का लोकार्पण किया। उन्होंने वैदिक शिक्षा, संगीत और योग प्रशिक्षण के कार्यों में उल्लेखनीय योगदान देने वालों को सम्मानित भी किया।

रविवार को झंडारोहण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने ...

Himachal Pradesh Governor Acharya Dev Vrata with meritorious students of Tapovan Ashram, who were awarded tablets, at a function in Dehradun on Sunday.

Himachal Governor opens Satsang Bhavan in Doon

TRIBUNE NEWS SERVICE

DEHRADUN, MAY 15

Acharya Dev Vrata, Governor of Himachal Pradesh ... from our society which has been a part of our civilisation. Vedic Sadhan Ashram Tapovan is doing exemplary ... Hotri said, "Tapovan Ashram has been engaged in providing education to children who come from ...

HP Gov inaugurates Satsang Bhawan at Tapovan Ashram

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 15 May: Governor of Himachal Pradesh Acharya Dev Vrata inaugurated the 'Mahatma Prabhu Ashrit Satsang Bhawan' today at the Tapovan Ashram, here. On the occasion Acharya Dev Vrata also felicitated eminent personalities who have contributed to society by their exemplary work in the field of Vedic education, Vedic music and imparting Yogic training, besides 10 meritorious students ...

... Deekshanand's Smriti Diwas. Prem Prakash Sharma, Secretary, said, "We are extremely honoured that people from all over the country have joined us in taking the torch of Mahatma Prabhu ... Swami Deekshanand ... Students ... Brahmacharis of Ashram presented programmes on the event. Acharya ... Darshnacharya Umesh Sharma ... Satypal Pathik ... Kachroo ...

आश्रम में मनाया गया स्वामी दीक्षानंद स्मृति दिवस समारोह

दस विद्यार्थियों को किया सम्मानित

हिमाचल के राज्यपाल ने किया सत्संग भवन का उद्घाटन

'वैदिक शिक्षा देने वाली संस्थाओं की जरूरत'

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देव व्रत ने देहरादून के तपोवन आश्रम में महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन का उद्घाटन किया

वैदिक साधन आश्रम तपोवन में मनाया गया स्वामी दीक्षानंद स्मृति दिवस समारोह

देहरादून, मई 15 : जाने-माने वेदज्ञ एवं हिमाचल के राज्यपाल आचार्य देव व्रत ने तपोवन आश्रम में ... प्रभु आश्रित सत्संग भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने वैदिक शिक्षा, संगीत और योग प्रशिक्षण में उल्लेखनीय कार्य करने वालों को ...

स्वामी दयानंद के सिद्धांत को आगे बढ़ाना होगा: डा. देवव्रत

तपोवन आश्रम में हस्तियां सम्मानित

देहरादून | वरिष्ठ संवाददाता

हिमाचल के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने तपोवन वैदिक साधन आश्रम के प्रयासों की जमकर सराहना की। आचार्य देवव्रत रविवार को दून में थे। उन्होंने रायपुर के तपोवन आश्रम में स्वामी दीक्षानंद स्मृति दिवस पर महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन का उद्घाटन किया। इस दौरान कई हस्तियों को सम्मानित भी किया गया। देवव्रत ने कहा, देश में वैदिक शिक्षा ...

गाय की जय करते हैं तो पालें भी: आचार्य देवव्रत

- तपोवन में आयोजित कार्यक्रम में बोले हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल
- स्वामी दयानंद सरस्वती के ... आगे बढ़ाने ...

जागरण संवाददाता, देहरादून: हिमाचल के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि गौ माता का संरक्षण सिर्फ उसकी जय जयकार करने से नहीं होगा। बल्कि उसकी नस्ल सुधारने का कार्य भी करना होगा। ...

पाखंडी बाबाओं के चलते बढ़ रहा अंधविश्वास : देवव्रत

रक्षण उत्तराखण्ड संवाददाता

वेदों में ब्रह्मांड का सार: देवव्रत

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल ने किया सत्संग भवन का लोकार्पण

Mahatma Prabhu Ashrit Satsang Bhawan inaugurated

ओ३म्

पवमान

वर्ष–28 अंक–6

ज्येष्ठ–आषाढ़ 2073 विक्रमी जून 2016

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,117 दयानन्दाब्द : 192

★

–: संरक्षक :–

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 08755696028

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
क्या परमेश्वर अवतारवाद लेता है	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
मूर्ति पूजा सबसे बड़ा पाखण्ड है	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	7
हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल......	मनमोहन कुमार आर्य	11
प्रारब्ध का फल नाश	प्रभु आश्रित जी महाराज	15
पारसमणि की बटिया	पं० शिव शर्मा उपदेशक	18
ईश्वरीय–व्यवस्था	डॉ० सुधीर कुमार आर्य	19
देवी पर बली	स्व० गंगा प्रसाद उपाध्याय	20
अंधविश्वास की काली छाया	डॉ० महीप सिंह	22
मण्डन के साथ–साथ खण्डन...	डॉ० विवेक आर्य	24
शिशुओं के रोग और उनके आयुर्वेदिक..	डॉ० अजीत मेहता	26
मूर्ति–पूजा की व्यर्थता	इन्द्रजित देव	28
गृहस्थ आश्रम सुखों का आधार	महात्मा दयानन्द जी	30

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. ''वैदिक साधन आश्रम''	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. ''पवमान''	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. ''वैदिक साधन आश्रम''	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन''	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाइट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाइट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

पाखण्ड–खण्डन

अप्रैल 1867 के कुम्भ मेले से महर्षि ने समाज सुधार का कार्य आरम्भ किया। समाज में व्याप्त पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुरीतियों, गुरुडम, आडम्बर, जातिवाद, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, सतीप्रथा, बालविवाह, जादू–टोना आदि कुप्रथाओं के विरुद्ध उन्होंने सारे देश के भिन्न–भिन्न स्थानों में घूमघूम कर घोर प्रचार करते हुए आवाज बुलन्द की। अपने विचारों को महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश नामक अपने कालजयी ग्रन्थ मे ंउल्लिखित किया और 10 अपैल 1875 को इस उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की। हमने विगत कई वर्षों की भांति इस वर्ष भी 20 अप्रैल को आर्यसमाज के झण्डे के तले उत्तराखण्ड की पवित्र भूमि हरिद्वार में कुंभ मेले के अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर जोर शोर से पाखण्ड के विरुद्ध प्रचार किया। हम यदि किसी और को आरोपित करते हुए एक उंगली से इशारा करते हैं तो अन्य तीन उंगलियां हमारी ओर भी इशारा करती हैं। हम वेदादि शास्त्रों का ज्ञानी होने का दम्भ भरते हैं। क्या इन शास्त्रों का हमें इतना ज्ञान है कि आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के द्वारा प्रतिपादित वैदिक दर्शन और सिद्धान्तों के द्वारा हम जनसामान्य का मार्गदर्शन कर सकें। हमने समाज में मनुस्मृति प्रतिपादित वर्ण–व्यवस्था स्थापित करने का बीड़ा उठाया है। इस दिशा में हमारी प्रगति क्या है?क्या हमने अपने गुरुकुलों में कभी मनुस्मृति आदि शास्त्रों में प्रतिपादित सिद्धान्तों के आधार पर समावर्त्तन संस्कार कराकर अन्तेवासी छात्रों को ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण आबंटित किए हैं? हम आर्य हैं परन्तु फिर भी अपनी जन्मना जाति के आधार पर ही अपने पुत्र–पुत्रियों के विवाह हेतु जीवन साथी का चुनाव करते हैं। क्या हमने कभी वर या वधू का चुनाव करते समय आर्यत्व का आधार रखा है? क्या हम यह निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि हमारे घर में कोई मूर्तिपूजा नहीं करता है। इन प्रश्नों में से किसी भी एक प्रश्न का सकारात्मक उत्तर हमारे पास सम्भवतः नहीं है। हम दिन में यदि दो बार संध्या करते हैं तो बारह बार और एकबार संध्या करने पर छः बार कहते हैं कि जो कोई हमसे द्वेष करता है और हम जिससे द्वेष करते हैं, उस द्वेषभाव को हम ईश्वर के मुख अर्थात् न्याय व्यवस्था में रखते हैं। हम इस संकल्प पर विचार न करते हुए, आपसी द्वेष के कारण फिरकों में बंट रहे हैं और मुकदमेबाजी कर रहे हैं। यह हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम आत्मावलोकन करें। वेद हमारे आदर्श हैं। वेद में दिए गए विधि और निषेध का पालन करना और आर्यसमाज के नियमों के अनुकूल जीवन बिताना हमारा परम धर्म है। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश की रचना अन्ध–विश्वासों, पाखण्डों भ्रान्तियों, मत–मतान्तरों के अवैज्ञानिक प्रलापों का घोर खण्डन करने के लिए की थी। सत्यार्थप्रकाश का संदेश आज पहले से अधिक प्रासांगिक है क्योंकि प्रचार–प्रसार के दूर–दर्शन आदि माध्यमों से समाज में आडम्बर और पाखण्ड पहले से अधिक बढ़ गया है। उषाकाल प्रारम्भ होने के साथ ही अनेक चैनलों पर पाखण्डियों का प्रचार प्रारम्भ हो जाता है। समाज में व्याप्त इस पाखण्ड का हमें घोर खण्डन करना है परन्तु इससे पूर्व अपने अन्दर के आडम्बरों और पाखण्डों को भी समूल नष्ट करना होगा, इस संकल्प के साथ यह पाखण्ड–खण्डन विशेषांक सुधि पाठकों की सेवा में समर्पित है।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

❀ वेदामृत ❀

थोड़ी–सी उपासना भी महान् फलदायक

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिद्धयस्य वर्धनम्।।

ऋषिः– मारीचः कश्यपः।। देवता– विश्वेदेवाः।। छन्दः– गायत्री।।

विनय– प्रभु की थोड़ी–सी भी भक्ति महान् फल देनेवाली होती है। हम लोग समझा करते हैं कि थोड़े से सन्धया–भजन से, एक–आध मन्त्र द्वारा उसका स्मरण कर लेने से हमारा क्या लाभ होगा, या एक दिन यह भजन छोड़ देने से हमारी क्या हानि होगी, परन्तु यह सत्य नहीं होगा? हमारी उपासना चाहे कितनी स्वल्प और तुच्छ हो, परन्तु वह उपास्यदेव तो महान् है। ज्ञान और शक्ति में वह हमसे इतना महान् है कि हम कभी भी उसके योग्य उसकी पूरी भक्ति नही कर सकते और उसके सामने हम इतने तुच्छ हैं कि वह यदि चाहे तो अपने थोड़े–से दान से हमें क्षण में भरपूर कर सकता है। हम यदि थोड़ी देर के लिए भी उससे अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं तो वह महान् देव उस थोड़े–से समय में ही हमे भर देता है। सन्त लोग अनुभव करते हैं कि प्रभु का क्षण–भर ध्यान करते ही प्रभु की आशीर्वाद–धारा उनके लिए खुल जाती है और वे उस क्षण–भर में ही प्रभु के आशीर्वाद से नहा जाते हैं और आत्मा आनन्दरस से पवित्र और प्रफुल्ल हो जाते हैं, परन्तु यहि हम साधारण लोगों की प्रार्थना–उपासना अभी उस महाप्रभु से इतना ऐश्वर्य नहीं पा सकती है, तब तो हमें उसके थोड़े–से भी भजन का नियमित सेवन करना चाहिए, एक भी दिन, एक भी समय नागा न करना चाहिए। एक समय भी नागा होने से जो सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है, वह फिर जोड़ना पड़ता है। यही कारण है कि नागा होने पर प्रायश्चित्त का विधान है। एवं, एक समय नागा होने से एक समय की देरी ही नहीं होती, अपितु दुबारा सम्बन्ध जोड़ने जितनी देरी हो जाती है, अतः हम चाहे किसी दिन भजन में बिल्कुल दिल न लगा सकें, तथापि उस दिन भी कुछ–न कुछ उपासना अवश्य करनी चाहिए, यत्न अवश्य करना चाहिए। पीछे पता लगता है कि एक दिन का भी यत्न व्यर्थ नहीं गया, एक–एक दिन की उपासना ने हमें बढ़ाया है–हमारे शरीर, मन और आत्मा को उन्नत किया है।

कम–से–कम यह तो असन्दिग्ध है कि संसार की अन्य बातों में हम जितना समय देते हैं, सांसारिक बातों की जितनी स्तुति–उपासना करते हैं और उससे जितना फल हमें मिलता है, उससे अनन्त गुणा फल हमे प्रभु की (अपेक्षया बहुत ही थोड़ी–सी) स्तुति–उपासना से मिल सकता है और मिल जाता है। कारण स्पष्ट है, क्योंकि वह महान् है, ज्ञान का भण्डार है, सर्वशक्तिमान् है और ये सांसारिक बातें अल्प हैं, तुच्छ हैं, निस्सार हैं, केवल ज्ञानशक्तिविहीन विकार हैं।

शब्दार्थ– **महे**=महान् **प्रचेतसे**=बड़े ज्ञानी **देवाय**=इष्टदेव परमेश्वर के लिए **कत् उ**=कुछ भी, थोड़ा–सा भी **वचः शस्यते**=वचन–स्तुतिरूप में कहा जाए **तत् इत् हि**=वह ही निश्चय से **अस्य**=इस वक्ता का **वर्धनम्**=बढ़ानेवाला है।

वैदिक विनय से साभार

क्या परमेश्वर अवतार लेता है

—कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवतार शब्द 'अव' पूर्वक 'तॄ' धातं से बनता है। 'अव' का अर्थ रक्षा करना और तॄ' का अर्थ उतरना है। इस प्रकार भगवान् अवतार लेकर भक्तों की रक्षा करता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने कालजयी ग्रन्थ में एक शंका, जिसमें यह प्रश्न किया गया था कि शिव, विष्णु, गणेश, सूर्य ओर देवी आदि के शरीर धारण करके राम, कृष्ण आदि अवतार हुए हैं, इससे उनकी मूर्ति बनती हैं, क्या यह बात भी झूठी है?का उत्तर देते हुए कहते हैं कि यह बात झूठी है क्योंकि 'अज एकपात्' और 'अकायम्' इत्यादि विशेषणों से परमेश्वर का जन्म, मरण और शरीर धारण रहित होना वेदों में कहा गया है। युक्ति से भी परमेश्वर का अवतार कभी नहीं हो सकता है कयोंकि जो आकाशवत् सर्वत्र व्यापक, अनन्त ओर सुख, दुःख, दृश्यादि गुणों से रहित है, वह एक छोटे से वीर्य, गर्भाशय और शरीर में क्योंकर आ सकता है? ईश्वर वह है जो एकदेशीय न हो और जो अचल व अदृश्य हो। जिसके विना एक परमाणु भी खाली नहीं है, उसका अवतार कहना मानो वन्ध्या के पुत्र का विवाह कर उसके पौत्र के दर्शन करने की बात कहना है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती 31 जुलाई, सन् 1879 को बदायूं पधारे थे। इसी दौरान माह अगस्त के प्रथम सप्ताह में सम्भवतः 5 अगस्त के बाद किसी दिन उनका पण्डित रामप्रसाद और पण्डित वृन्दावन से शास्त्रार्थ हुआ था। इसमें पण्डित रामप्रसाद ने कहा कि स्वामी जी—ऐसा न समझना चाहिए कि परमेश्वर अवतार नहीं लेता और यह वेद विरुद्ध है। पण्डित रामप्रसाद ने विष्णु का वामन अवतार सिद्ध करने के लिए निम्न मंत्र उद्धरित किया—

''इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्''

महर्षि ने इसके उत्तर में बताया कि इस मंत्र से वामन अवतार होना सिद्ध नहीं होता है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर अपनी सामर्थ्य से सब जगत् को तीन स्थानों में स्थापन करके धारण करता है। यह नहीं कि परमेश्वर ने तीन चरण रखे, जैसा कि पण्डित रामप्रसाद कह रहे थे। पण्डित वृन्दावन ने इस पर माना कि विष्णु साकार नहीं है। स्वामी जी ने इसके उपरान्त दोनों पण्डितों से, 'विष्णु' पद किस धातु से बना है उसके आधार पर अर्थ करवाया। पण्डित वृन्दावन ने स्पष्ट किया कि विष्णु पद ''विष्लृ व्याप्तौ'' धातु से बनता है अर्थात् जो सर्वव्यापक है, उसे विष्णु कहते हैं। स्वामी जी ने सिद्ध कर दिया कि जो व्यापक है, वह साकार कैसे हो सकता है। इस प्रकार ईश्वर का अवतार लेना वेद के विरुद्ध कथन है।

वेद में अनेक मंत्र परमात्मा के जन्म लेने का विरोध करते हैं, जैसे—

अजो न क्षां दाधार पृथिवीं तस्तम्भ द्यां मन्त्रेभिः सत्यैः।

प्रिया पदानि पश्वो नि पाहि विश्वायुरग्ने गुहं गुहं गाः।। (1/67/3)

उपरोक्त मंत्र का भावार्थ यह है कि जैसे न जन्म लेने वाला परमेश्वर न टूटने वाले विचारों से पृथिवी को धारण करता है, विस्तृत अन्तरिक्ष तथा द्युलोक अथवा सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों को

सौजन्य से— **RIKKI PLASTIC (PVT.) LTD.**
(ISO/TS 16949:2002 Registered)
Plot No. B-5, Sector-59, Opp. JCB India Ltd., Ballabgarh, Faridabad, Haryana (INDIA)
Tele : 0129-4154941-42, Telefax : 0129-4154950

गिरने से रोकता है, प्रीतिपूर्वक प्राप्तव्य पदार्थों को देता है, सम्पूर्ण आयु देने वाला बन्धन से सर्वथा छुड़ाता है। बुद्धि में स्थित हुआ वह गुह्य पदार्थों को जानता है, वैसे ही विद्वान् जीव! तू भी हमें अज्ञान आदि से छुड़ा कर प्राप्तव्य को प्राप्त करा।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि परमात्मा को जन्म लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। उसके सर्वव्यापक होने से सारा ब्रह्माण्ड ही उसका शरीर है, तो उसे एक तुच्छ शरीर को धारण करने में क्या लाभ हो सकता है? जब सारे रूपधारी पदार्थ भी ब्रह्म ही हैं, ऐसे में उसके अवतार लेने का क्या प्रयोजन रह जाता है। अद्वैतवादियों के मतानुसार ब्रह्म से भिन्न कोई पदार्थ संसार में नहीं है। फिर कौन किस के गर्भ में प्रवेश करके जन्म लेकर किसकी रक्षा करता है?

पौराणिक बन्धु राम, कृष्ण आदि को परमात्मा का अवतार मानते हैं और यह मानते हैं कि उनके शरीरों में भी जीवात्मा था। यदि वे परमात्मा थे तो उनमें जीवात्मा नहीं होना चाहिए था। यदि जीवात्मा भी था तो वे दूसरे मनुष्यों के समान ही थे। फिर परमात्मा और जीवात्मा में क्या भेद रहा?यदि उनके शरीर में परमात्मा ही था तो परमात्मा ने ऐसा कौन सा कर्म किया था कि उसे राम, कृष्ण आदि का मानव शरीर धारण करना पड़ा। राम स्वयं कहते हैं कि–

कि मया दुष्कृतं कर्म कृतमन्यत्र जन्मनि। येन मे धार्मिको भ्राता निहतश्चाग्रतः स्थितः।। –वा0 रा0 यु0 स0 101

अर्थात् मैंने दूसरे जन्म में कौन सा ऐसा बुरा कर्म किया था कि जिसके कारण मेरा धार्मिक भाई मेरे सामने मरा पड़ा है।

क्या परमात्मा कंस, रावणादि का नाश करने के लिए जन्म लेता है?

गीता में श्रीकृष्ण का अर्जुन को संदेश– गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

उपरोक्त श्लोक का भावार्थ यह है कि जब भी धर्म का पतन होता है तो उसको उठाने के लिए वे स्वयं को उत्पन्न करते हैं। भले मनुष्यों की रक्षा करने और दुष्टों का नाश करने के लिए वे हर युग में जन्म लेते हैं। गीता के इन वाक्यों को अवतार लेने के प्रयेजन के रूप में उद्धरित किया जाता है। एक प्रकार से यह विचारधारा हिन्दुओं में पाये जाने वाले अवतारवाद की आधार शिला है। पाश्चात्य देशों में भी समय–समय पर ईसामसीह, मुहम्मद साहेब आदि पैगम्बर जन्म लेते रहे हैं, जो ईश्वर के अवतार न थे। उनका भी वही उद्देश्य था जो अवतारों का माना जाता है। जिस प्रकार राम के साथ रावण का और कृष्ण के साथ कंस का नाम लिया जाता है, उसी प्रकार मूसा के साथ फिर–ऊन का और ईसा के साथ यहूदी पुजारियों का नाम लिया जाता है।

वेदान्त दर्शन के अनुसार ईश्वर का कार्य– वेदान्त दर्शन के अनुसार ईश्वर एक सर्वोत्तम सत्ता है। इसी से सृष्टि की रचना, पालन–पोषण और अन्त होता है। वह परमेश्वर प्रत्येक क्षण में किसी न किसी जीव को जन्म, देता है, उसे बढ़ाता है या उसे मृत्यु देता है। इसलाम की प्रसिद्ध पुस्तक में भी वर्णित है कि ईश्वर वह है जो जीवन से मृत्यु और मृत्यु से जीवन देता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि जब प्रत्येक जीव के जन्म और मृत्यु सम्बन्ध उस परमपिता परमेश्वर के साथ में है तो वह किसी भी जीव का किसी भी क्षण विनाश कर सकता है या अपनी ईश्वरीय व्यवस्था के अन्तर्गत करवा सकता है, उसे फिर मनुष्य के रूप में जन्म लेने की क्या आवश्यकता है? श्रीराम और श्रीकृष्ण के देहावसान के बाद भी मनुष्यों पर अनेक विपदाएं पड़ीं और अनेक दानवी शक्तियों का आतंक फैला परन्तु कोई भी अवतार पैदा नहीं हुआ।

ईश्वर अपने सार्वभौमिक सिद्धान्तों और शक्तियों के माध्यम से जनन, वृद्धि और नाश का कार्य सदैव करता रहता है। वह मनुष्यों के सुधार के लिए न स्वयं अवतार लेता है और न ही पैगम्बर के रूप में किसी अन्य को पृथिवी पर भेजा करता है। वैदिक काल से आज तक इस संसार में सैकड़ों ऋषि, मुनि और समाज सुधारक पैदा हुए। उन्होंने धर्म का पालन करते हुए दुष्टों से समाज की रक्षा की और लोगों को कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर चलाया। उन्होंने कभी भी परमात्मा का संदेश्वाहक या पैगम्बर बनने का दावा नहीं किया।

वैदिक विचारधारा के अनुसार ईश्वर सर्वप्रेरक है–

योगीराज श्रीकृष्ण ने कौरवों को समझाने और पाण्डवों की सहायता करने का जो प्रयत्न किया, वह उनकी पीड़ित से सहानुभूति और सत्य के प्रति निष्ठा थी। इस कार्य के लिए ईश्वर को अवतार लेने की कोई आवश्यकता नहीं थी। परमात्मा सर्वव्यापक है, वह एकदेशीय नहीं है। जो सर्वव्यापक है, उसे एक स्थान पर मनुष्य की भांति एकदेशीय कैसे बनाया जा सकता है और उसकी अनुपस्थिति में सृष्टि के संचालन की व्यवस्था कौन देखता है। इन प्रश्नों पर विचारोपरान्त हम पाते हैं कि ईश्वर किसी भी दशा में अपनी सर्वव्यापकता को छोड़कर एकदेशीय नहीं बन सकता है और न ही इसकी कोई आवश्यकता है। हम आर्यसमाज के सदस्यों पर भी गीता के उक्त श्लोक का कुछ प्रभाव पाते हैं, क्योंकि वे भी यह कहते हुए सुने जाते हैं कि परमेश्वर ने धर्म की ग्लानि को देखते हुए दयानन्द को हमारे पथ–प्रदर्शन हेतु भेजा था। मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है। परमात्मा केवल प्रेरक है। वह प्रेरणा देने का काम करता है। उसी की प्रेरणा से सृष्टि के सभी कार्य स्वतः ही संचालित हो रहे हैं। उसी की प्रेरणा से समस्त मानव पुरुषार्थ में लगे हैं। वह हमें सदैव कर्म करने की प्रेरणा देता है।

१. परमेश्वर का सच्चा स्वरूप

परमेश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, सर्वव्यापक और नित्य आदि अनेकानेक गुणों से युक्त है। परमेश्वर आप्त–काम और पूर्णकाम है। परमात्मा में कोई कामना नहीं है जिसे उन्हें पूरा करना हो। अथर्ववेद में परमात्मा के विषय में कहा गया है–

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनेनः। अथर्व0 10.8.44

इस मंत्र का भावार्थ यह है कि परमेश्वर अकाम हैं, अर्थात् सारी कामनाओं से रहित हैं, उन्हें अपने लिए किसी वस्तु को प्राप्त नहीं करना है, वे धीर हैं, संसार के किसी भी परिवर्तन से उनमें कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, वे सदा एक–रस रहते हैं, वे अपनी समावस्था को नहीं खोते हैं, वे मृत्यु से रहित हैं, स्वयंभू हैं– अपनी सत्ता का हेतु स्वयं ही हैं, उनकी सत्ता में और कोई कारण नहीं है, उन्हें किसी ने बनाया नहीं है, वे सदा से स्वयं ही चले आ रहे हैं, वे आनन्द से तृप्त हैं, परिपूर्ण हैं अर्थात् कहीं से भी किसी प्रकार की कमियों वाले नहीं हैं। वेद मे ऐसे ही परमेश्वर की उपासना का संदेश दिया गया है।

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी तपोवन, नाला पानी देहरादून के सभी सदस्य आश्रम द्वारा आयोजित ग्रीष्मोत्सव को सफल बनाने के लिए अपने सभी सहयोगियों दान–दाताओं तथा सम्मानीय अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप अपने परिवारजनों के साथ आश्रम में पधारें और आश्रम द्वारा संचालित कार्यक्रमों में सहयोगी बनें। इसके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं।

यदि आप ग्रीष्मकाल में देहरादून, मसूरी, चकराता और नैनीताल भ्रमण कर जाने का कार्यक्रम बना रहे हैं तो इन सभी स्थानों पर आर्य समाज भवनों में आवास की उचित व्यवस्था है। इसके लिए आप निम्न व्यक्तियों से सम्पर्क कर सकते हैं।

1. श्री प्रेमप्रकाश शर्मा, सचिव, तपोवन आश्रम, देहरादून, 09412051586 2. श्री नरेन्द्र साहनी, मसूरी, 09837056165, 3. श्री तीरथ कुकरेजा, चकराता, 08755525556, 4. श्री केदार सिंह, नैनीताल, 05942237329

मूर्ति पूजा सबसे बड़ा पाखण्ड है

–कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

संसार में मूर्ति पूजा का इतिहास ज्ञात करने पर पता चलता है कि जैन–बौद्ध–काल से पूर्व इसका आरम्भ नहीं हुआ था। चीन के प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता और यात्री फाहियान ने सन् 400 ई0 में भारत की यात्रा की थी। उसने देखा था कि पटना में प्रतिवर्ष दूसरे मास के आठवें दिन मूर्तियों की एक सवारी निकाली जाती थी। उसका रूप आजकल की, जगन्नाथ यात्रा में निकाली जाने वाली मूर्तियों की रथ यात्रा के समान था। फाहियान की यात्रा के लगभग 240 वर्ष बाद सन् 640ई0 में दूसरा चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया। उसके आगमन के समय तक हिन्दुओं में भी मूर्ति पूजा का प्रचलन हो चुका था। कुछ विद्वानों का मत है कि सबसे पहले मूर्ति पूजा जैनियों ने प्रारम्भ की और बौद्धों ने जैनियों से मूर्ति पूजा करना सीखा। हिन्दुओं ने जैनियों और बौद्धों से मूर्ति पूजा करना सीखा था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार पाषाणदि मूर्ति पूजा जैनियों से प्रचलित हुई। मूर्ति पूजा के प्रारम्भ के समय के सम्बन्ध में विद्वानों के मतों में थोड़ा–बहुत अन्तर हो सकता है परन्तु यह निर्विवादित तथ्य है कि वैदिक काल से लेकर महाभारत काल पर्यन्त इस देश में किसी प्रकार की मूर्ति पूजा नहीं की जाती थी। विचारणीय विषय यह है कि मूर्ति पूजा का आरम्भ क्यों हुआ?

महर्षि सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें सम्मुलास में लिखते हैं– ''जब बडे–बड़े विद्वान्, राजा, महाराजा, ऋषि, महर्षि लोग महाभारात युद्ध में बहुत से मारे गए और बहुत से मर गए तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला।. .....केवल जीविकार्थ पाठमात्र ब्राह्मण लोग पढ़ते रहे सो पाठमात्र भी क्षत्रिय आदि को न पढ़ाया, क्योंकि जब अविद्वान् हुए गुरु बन गए तब छल, कपट, अधर्म भी उनमें बढ़ता चला। ब्राह्मणों ने विचारा कि अपनी जीविका का प्रबन्ध बाँधना चाहिए। सम्मति करके यही निश्चय कर क्षत्रिय आदि को उपदेश करने लगे कि हम ही तुम्हारे पूज्यदेव हैं। विना हमारी सेवा किए तुमको स्वर्ग या मुक्ति नहीं मिलेगी। किन्तु जो तुम हमारी सेवा न करोगे ता घोर नरक में पड़ोगे। जो–जो पूर्ण विद्या वाले धार्मिकों का नाम ब्राह्मण और पूजनीय वेद और ऋषि–मुनियों के शास्त्र में लिखा था उनको अपने मूर्ख, विषयी, कपटी, लम्पट, अधर्मियों पर घटा बैठे। भला, वे आप्त विद्वानों के लक्षण इन मूर्खों में कब घट सकते हैं?परन्तु जब क्षत्रियादि संस्कृत विद्या से अत्यन्त रहित हुए तब उनके सामने जो–जो गप्प मारी सो–सो विचारों ने मान ली। तब इन नाम मात्र के ब्राह्मणों की बन पड़ी। सबको अपने वचन–जाल में बाँधकर कहने लगे कि– ब्रह्मवाक्यं जनार्दनः । (पाण्डव गीता)

महर्षि स0 प्र0 एका0 समु0 में कहते हैं– '' जब पोपजी अपने चेलों को जैनियों से रोकने लगे तो भी मन्दिरों में जाने से न रुक सके और जैनियों की कथा में भी लोग जाने लगे। जैनियों के पोप इन पुराणियों के पोपों के चेलों को बहकाने लगे। तब पुराणियों ने विचारा कि इसका कोई उपाय करना चाहिए, नहीं तो अपने चेले जैनी हो जायेंगे। पश्चात् पोपों ने यही सम्मति की कि जैनियों की सदृश चौबीस अवतार, मन्दिर, मूर्ति और कथा के पुस्तक बनावें। इन लोगों ने जैनियों के चौबीस तीर्थंकरों के सदृश चौबीस अवतार, मन्दिर, और मूर्तियाँ बनाईं। और जैनियों के आदि और उत्तर पुराणादि हैं, वैसे ही अठारह पुराण बनाने लगे।

वेदों में मूर्ति पूजा का अत्यन्त निषेध– वेदों में मूर्ति पूजा का कोई विधान नहीं है। वेद में तो स्पष्ट घोषणा की गई है–

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यश।

अर्थात् जिसका नाम महान् यशवाला है, उस परमात्मा की कोई प्रतिमा परिमाण सादृश्य वा मूर्ति नहीं है।

महर्षि लिखते हैं कि वेदों में परमेश्वर के स्थान पर अन्य पदार्थ को पूजनीय मानने का सर्वथा निषेध किया गया है।

महषि, स0 प्र0 एका0 समु0 में एक शंका 'मूर्ति पूजा में पुण्य नहीं तो, पाप तो नहीं है।' का उत्तर देते हैं–'कर्म दो प्रकार के होते हैं:–एक विहित– जो कर्त्तव्यता से वेद में, सत्यभाषाणदि प्रतिपादित हैं। दूसरे निषिद्ध हैं। जैसे विहित का अनुष्ठान करना वह धर्म, उसका न करना अधर्म है, वैसे ही निषिद्ध कर्म करना अधर्म और न करना धर्म है। जब वेदों से निषिद्ध मूर्तिपूजादि कर्मों को तुम करते हो तो पापी क्यों नहीं?

पुराणों के अनुसार मूर्ति पूजा का स्वरूप–

जहां पुराणों में अनेक स्थानों पर मूर्ति पूजा का विधान मिलता है और एक दृष्टि से देखा जाए तो पुराणों की रचना ही अवतारवाद की स्थापना और मूर्ति पूजा को शास्त्रीय रूप देने के लिए की गई थी, वहीं इन ग्रन्थों में मूर्ति पूजा का अत्यन्त निषेध मिलता है। समस्त अठारह पुराणों का प्रणयन महर्षि वेद व्यास द्वारा किया जाना बताया गया है परन्तु सभी में न केवल सृष्टि के उत्पन्न होने के विषय में भिन्न–भिन्न कथाएं दी गई हैं अपितु प्रत्येक पुराण में दूसरे पुराण के आराध्य देवता की पूजा करने का घोर विरोध किया गया है। निम्न उदाहरण सुधि पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं–

पुराणों में मूर्ति पूजा का निषेध–

१– श्रीमद्भागवत, स्कं0 १०, अ0 ८४ में कहा गया है कि पत्थरों की मूर्तियां देवता नहीं होतीं। वे बहुत काल में भी पवित्र नहीं करती हैं।

२– श्रीमद्भागवत, स्कं0 ३, अ0 २६/२१–२२ में कहा गया है कि सर्वप्राणियों में जीवात्मा रूप में मैं व्याप्त रहता हूँ। जो मेरा निरादर करके मूर्ति का पूजन करते हैं, यह विडम्बना है। मैं सबकी देह में रहने वाला हूँ। जो मनुष्य मुझे त्याग कर प्रतिमा का पूजन करते हैं, वे अपनी अज्ञानता से राख में हवन करते हैं।

३– देवी भागवत, स्कं0 ६, अ0 ७/४२ में कहा गया है–

न ह्यम्बमयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः।
ते पुनन्त्यपि कालेन विष्णुभक्ता क्षणादहो।।

अर्थात् पानी के तीर्थ नहीं होते, मिट्टी और पत्थरों के देवता नहीं होते, वे किसी काल में भी पवित्र नहीं करते हैं।

पुराणों में आराध्य देवता से भिन्न अन्य देवताओं की पूजा का विरोध– कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं–

१– गणेश पूजा का निषेध–

योऽमूद् गजाना गणाधिपतिर्महेशात् तं भजन्ति मनुजा वितथप्रपन्नाः।

जानन्ति तेन सकलार्था फल प्रदात्रीः त्वां देवि विश्व जननी सेवनीयाम्।।

अर्थात् जो गणों के अधिपति शिवजी से पैदा हुआ है, उस गणेश जी की मूर्ख लोग पूजा करते हैं, वे सकल कला वाली एवं फलदात्री आपको नहीं जानते (इसलिए मूर्खतावश पूजा करते हैं)। पौराणिकों के समस्त मंगल कार्य गणेश पूजा से प्रारम्भ होते हैं, परन्तु देवी भागवत (५–१६–२०) में गणेश पूजा का निषेध है।

२– विष्णु पूजा का निषेध–

शप्तो हरिस्तु भृगुणा कुपितेन कामं मीनो बभूव कमठः खलु शूकरस्तु।

पश्चात्नृसिंह इति यच्छल कृद्धरायां तान्सेवितान्जननि मृत्यु भय न किं स्यात्।।

अर्थात् जिस विष्णु ने भृगु के शाप से मछली, कछुआ, शूकर और नृसिंह के अवतार धारण किए और पीछे वामनादि बनकर संसार में छल किया, उस विष्णु के अवतारों की जो भक्ति करेंगे, उन्हें मृत्यु भय क्यों नहीं प्राप्त होगा? देवी भागवत (५–१८–१८)

३– ब्रह्ममा और शिव की पूजा का निषेध–

अनचर्य्या ब्रह्मारुद्राद्या रजस्तमोविमिश्रिताः।
त्वं शुद्धसत्त्वगुणवान् पूजनीयोग्रजन्मनाम्।।

अर्थात् ब्रह्मा और शिव रजोगुण और तमोगुण से युक्त हैं, अतः ये पूजने योग्य नहीं हें। हे विष्णु! आप सतोगुणयुक्त हो, अतः आप ही ब्राह्मणों द्वारा पूजे जाने योग्य हो। पद्म पुराण(उ0 ख0 अ0 २६३/६०)

पुराणों में आपस में अत्यन्त विरोध और साम्प्रदायिक प्रतिद्वंदिता है जिसके अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। उपरोक्त दृष्टान्तों से यह सिद्ध होता है कि चाहे आदिकाल में मूर्तिपूजा का कुछ भी कारण रहा हो परन्तु आगे चल कर इसका व्यावसायिकता में विस्तार हुआ और यही कारण है कि प्रत्येक पुराण में दूसरे पुराण के आराध्य देव की कटु आलोचना करते हुए अन्य देवों की पूजा न किए जाने सम्बन्धी बातों का कठोर रूप से उल्लेख किया गया है। धन कमाने की यही लोलुपता और पौराणिक काल की साम्प्रदायिक ईर्ष्या आगे चल कर भारत के पतन का कारण बनी। आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा अपनी पुस्तक, 'परापूजा' में मूर्ति पूजा की कड़ी आलोचना की गई है। इस पुस्तक मे मूर्ति पूजा सम्बन्धी विरोध इस प्रकार है–

१– पुराणों का वाक्य है– प्रतिमा–पूजा अधम है, स्तोत्रों का जपना मध्यम है, वेद–पूजा सर्वोत्तम है, महात्माओं की पूजा 'सोऽहम्' है।

२– तीर्थ, पशुयज्ञ, लकड़ी, पत्थर और मिट्टी की मूर्तियों में जिनके मन लगे हैं, वे मनुष्य अज्ञानी हैं।

३– पत्थरों से एक स्थान में बांध कर और देव को पाषाण बना कर, अरे पण्डित! कह तो सही, वह देवता कहाँ पर रहता है?

जो निम्न प्रकार बताया गया है–

परमेश्वर का सच्चा स्वरूप–

यजुर्वेद (४०/८) में परमात्मा के विषय में कहा गया है–

सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँशुद्धमपापविद्धम।

अर्थात् परमात्मा सबमें व्यापक, शीघ्रकारी और अनन्त बलवान् जो शुद्ध, सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, सनातन, स्वयंसिद्ध, परमेश्वर अपनी जीवरूप सनातन आदि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है। यह सगुण स्तुति अर्थात् जिस–जिस गुण सहित परमेश्वर की स्तुति करना वह सगुण, अकाय अर्थात् वह कभी शरीर धारण व जन्म नहीं लेता, जिसमें छिद्र नहीं होता, नाड़ी आदि के बन्धन में नहीं आता और कभी पापाचरण नहीं करता है।

महर्षि ने वेद मंत्रों के आधार पर कहा कि परमेश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, सर्वव्यापक और नित्य आदि अनेकानेक गुणों से युक्त है। परमेश्वर आप्त–काम और पूर्णकाम है। परमात्मा में कोई कामना नहीं है जिसे उन्हें पूरा करना हो। अथर्ववेद में परमात्मा के विषय में कहा गया है–

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनेनः। अथर्व0 10.8.44

इस मंत्र का भावार्थ यह है कि परमेश्वर अकाम हैं, सारी कामनाओं से रहित हैं, उन्हें अपने लिए किसी वस्तु को प्राप्त नहीं करना है, वे धीर हैं, संसार के किसी भी परिवर्तन से उनमें कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, वे सदा एक–रस रहते हैं, वे अपनी समावस्था को नहीं खोते हैं, वे मृत्यु से रहित हैं, स्वयंभू हैं– अपनी सत्ता का हेतु स्वयं ही हैं, उनकी सत्ता में और कोई कारण नहीं

है, उन्हें किसी ने बनाया नहीं है, वे सदा से स्वयं ही चले आ रहे हैं, वे आनन्द से तृप्त हैं, परिपूर्ण हैं अर्थात् कहीं से भी किसी प्रकार की कमियों वाले नहीं हैं।

मूर्ति पूजा के प्रचलन से लोगों को यह बताया जाता है कि यदि मन्दिर में प्रसाद या रुपयों का चढ़ावा देंगे तो परमेश्वर प्रसन्न होकर उन्हें मनवांछित फल प्रदान करेंगे। यह बात उनके हृदय में बैठ जाती है और वे उपासना को व्यापार की वस्तु समझ बैठते हैं। वे समझते हैं कि परमेश्वर को प्रशंसा और कीर्तिगान चाहिए, जिसे प्रदान कर वे उससे अपना कोई भी प्रयोजन सिद्ध कर सकते हैं। परमेश्वर न तो प्रशंसा के भूखे हैं और न ही उन्हें किसी प्रसाद आदि से संतुष्ट किया जा सकता हैं। साथ ही वे परमात्मा की कर्मफल व्यवस्था से भी परिचित नहीं रहते हैं। यह सिद्धान्त निम्न प्रकार है–

कर्मफल भोग का सिद्धान्त–

वैदिक धर्म के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के लिए ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था परमात्मा के सार्वभौम नियमों द्वारा संचालित होती है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल परमात्मा के अधीन है। उसे शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। इसलिए मूर्ति पूजा निरर्थक है। परमात्मा का साक्षात्कार पांचों ज्ञानेन्द्रियों से नहीं किया जा सकता है। यदि उसका साक्षात्कार करके मोक्ष मार्ग पर बढ़ना है तो इसके लिए उसकी उपासना करनी चाहिए। विद्या और तप से अपने आत्मा को शुद्ध करके परमात्मा के गुणों का चिन्तन करते हुए उसमें ध्यान लगा कर समाधि की अवस्था तक पहुंचना ही उपासना का वास्तविक प्रयोजन है। मूर्ति पूजा– मृतक श्राद्ध, तर्पण, तंत्र विद्या, फलित ज्योतिष, गुरुडम, जातिवाद, सतीप्रथा, बालविवाह, पशुबलि आदि कुप्रथाओं और अन्धविश्वासों से बड़ा अज्ञान और पाखण्ड है। यह इस देश के पतन का सबसे बड़ा कारण रहा है। इस अन्धविश्वास को दूर करने में ही राष्ट्र की प्रगति और हमारा आध्यात्मिक कल्याण निहित है।

वर की आवश्यकता

चौहान जाति की एम.एससी. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, एस.बी.आई बैंक, ऋषिकेश में मैनेजर पद पर कार्यरत, आयु 32 वर्ष, हाईट 5′–1′′ के लिए योग्य वर चाहिए। पिता केन्द्रीय सेवा से सेवानिवृत क्लास–1 अधिकारी तथा राष्ट्रीय स्तर के आर्य विद्वान एवं लेखक। कृपया दहेज के इच्छुक तथा जन्मपत्री में विश्वास करने वाले व्यक्ति सम्पर्क न करें।

सम्पर्क सूत्र : 9412985121

ई–मेल : manmohanarya@gmail.com

सौजन्य से–

KUKREJA INSTITUTE OF HOTEL MANAGEMENT

DEHRADUN

ओ३म्

–वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का पांच दिवसीय उत्सव सम्पन्न–

'हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी ने आर्यसमाज को सशक्त बनाने के अनेक उपाय सुझाये'

–मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक साधन आश्रम का पांच दिवसीय ग्रीष्मोत्सव रविवार 15 मई, 2016 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। समापन दिवस का मुख्य आकर्षण हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी का देश भर से बड़ी संख्या में आये आर्यजनों को प्रभावशाली सम्बोधन था। पूर्वान्ह 10 बजे आश्रम में पहुंचने पर इसके मुख्य द्वारा पर आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, सचिव इं. प्रेम प्रकाश शर्मा, आर्यनेता और केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष डा. अनिल आर्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, डा. वेद प्रकाश गुप्ता, डा. सुश्री अन्नपूर्णा, श्री सुखबीर सिंह वर्मा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी व आश्रम सोसायटी के सभी सदस्यों एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मुख्य अतिथि का स्वागत एवं सम्मान वैदिक रीति से वेद मन्त्रोच्चार पूर्वक किया गया। मुख्य द्वार से नवनिर्मित सभागार तक मार्ग के दोनो ओर तपोवन विद्या निकेतन, द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल, देहरादून, श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा के छात्र–छात्राओं और केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के युवकों ने वेदमन्त्रोच्चार एवं पुष्प वर्षा कर मुख्य अतिथि महोदय का सम्मान किया। नवनिर्मित सभागार के मुख्य द्वार पर पहुंच कर मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल जी ने वैदिक ओ३म् ध्वज का ध्वजारोहण किया। उसके पश्चात उन्होंने सभा के नये भवन **'महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन'** का विधिवत् उद्घाटन किया। इसके पश्चात माननीय राज्यपाल जी मंच पर पधारे जहां आर्यसमाज के श्रद्धालुओं से खचाखच भरे हुए सभाभवन में प्रत्येक उपस्थित व्यक्ति द्वारा उनका खड़े होकर स्वागत किया गया। मंच पर मुख्य अतिथि महोदय के पहुंचने पर सबने खड़े होकर राष्ट्रगान गाया। इसके बाद राज्यपाल महोदय ने आश्रम के अधिकारियों के साथ मिलकर दीप प्रज्जवलन किया। दीप प्रज्जवलन के बाद द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की कन्याओं ने राज्यपाल महोदय के सम्मान में स्वागत गान गाया। तपोवन विद्यानिकेतन की 10 छात्राओं ने भी स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सुश्री सुनीता बुद्धिराजा द्वारा आश्रम की स्थापना की पृष्ठभूमि सहित आश्रम की गतिविधियों का परिचय मुख्य अतिथि महोदय को दिया गया। बहिन सुनीता जी ने बताया कि महात्मा प्रभु आश्रित जी द्वारा सन् 1939 में उनके पूर्वजों के यहां यज्ञाग्नि प्रज्जवलित की थी। उनके परिवार ने उस अग्नि को अभी तक बुझने नहीं दिया। वह अग्नि आज भी प्रज्जवलित हैं जहां प्रतिदिन यज्ञ किया जाता है। सुनीता जी ने यह भी बताया कि आज हम स्वामी दीक्षानन्द जी का स्मृति दिवस मना रहे हैं। इसके पश्चात आश्रम के सचिव श्री प्रेम प्रकाश शर्मा ने मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल जी का स्वागत किया। उन्होंने इस अवसर पर सम्मानित होने वाले महानुभावों के नाम भी सभा में घोषित किए और कहा कि हम आचार्य देवव्रत जी के राज्यपाल बनने से प्रसन्न, रोमांचित,

आनन्दित व अभिभूत हैं इसलिए कि हमारे विचारों वाले एक ऋषि भक्त को वर्तमान समय में राज्यपाल जैसे गरिमामय पद पर नियुक्त होने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि यह हम सबका सौभाग्य है। उन्होंने कहा कि राज्यपाल महोदय ने अपने श्रेष्ठ आचारण और गुणों का प्रभाव अपने राज्य पर छोड़ना आरम्भ कर दिया है। यदि आप जैसे राज्यपाल सभी राज्यों में हों तो हमारा देश विश्व का सिरमौर देश बन सकता है।

बहिन सुनीता जी ने बताया कि इस नये भवन की प्रेरणा आश्रम के न्यासी श्री आशीष दर्शनाचार्य जी द्वारा की गई थी। आचार्य जी आश्रम में समय समय पर युवकों के व्यक्तित्व निर्माण हेतु योग शिविर लगाते रहते हैं जहां उन्हें आधुनिक तरीकों से अपनी बात नई पीढ़ी के युवकों को समझानी होती है। इसके लिए आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित इस नये सभागार की आवश्यकता थी। आश्रम की कार्यकारिणी ने इस प्रस्ताव पर विचार किया। आश्रम के अध्यक्ष श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी का भी इस प्रस्ताव को समर्थन मिला। सभी ने सहयोग किया जिसका परिणाम यह भव्य व विशाल भवन है। बहिन सुनीता जी ने आचार्य देवव्रत जी के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश के एक श्रेष्ठ राज्य बनने की कामना की और उनका अभिवादन एवं स्वागत किया।

आचार्य देवव्रत जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि जिन महानुभावों ने उन्हें इस वैदिक साधन आश्रम तपोवन की पवित्र तपोस्थली पर आमंत्रित कर उन्हें सम्मान व स्नेह प्रदान किया है उनके प्रति वह सम्मान व्यक्त करते हैं और उनका धन्यवाद करते हैं। **उन्होंने कहा कि वह आज जो कुछ भी हैं उसका श्रेय ऋषि दयानन्द सरस्वती जी को है। यदि मैं ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की शरण में न आता तो आज इस स्थिति में कदापि न होता।** आचार्यजी ने कहा कि महात्मा आनन्द स्वामी, महात्मा प्रभु आश्रित जी और अनेक तपस्वियों ने इस स्थान को अपनी तपस्थली बनाया और दूसरों के लिए तप का मार्ग प्रशस्त किया। आचार्य आशीष दर्शनाचार्य को उन्होंने आर्यसमाज का गौरव बताया। उन्होंने आशीष जी द्वारा इस तपोभूमि को अपना कार्यक्षेत्र बनाने की प्रशंसा की और कहा कि वह हमें आर्य सिद्धान्तों से जोड़ रहे हैं। आज इस आश्रम का नया स्वरूप देखकर मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं। मेरा विश्वास है कि यहां युवकों को वैदिक विचारों का बनाने के प्रशिक्षण शिविर सहित आध्यात्म के शिविर लगेंगे और सिद्धान्तों पर चिन्तन होगा। हमें आशा है कि आचार्य आशीष जी इन कार्यों को आगे बढ़ायेंगे।

आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि मेरे पूर्व दो विद्वानों आचार्य आशीष और डा. राजेन्द्र विद्यालंकार ने आर्यसमाज की वर्तमान दशा पर पीड़ा व्यक्त की है। आपने उनकी भावनाओं व विचारों का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द ने तिल–तिल कर अपने जीवन को आहूत किया। विद्वान वक्ता ने कहा कि यदि स्वामी दयानन्द न आते तो हम भी पौराणिक साधुओं की तरह कमण्डलु लिये हुए बैठे होते। ऋषि दयानन्द ने ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने पर भी किसी के प्रति अपने पराये का भेद कभी नहीं किया। **महामानव ऋषि ने हमारा वेद से परिचय कराया। हमने उस सर्वहितैषी को जहर पिलाया फिर भी उन्होंने अपने सत्य व मानव कल्याण के रास्ते को नहीं छोड़ा। उनकी दया व कृपा से हम अन्धविश्वासों से दूर रहते हुए सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।** महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने आर्यसमाज के नौवें नियम की चर्चा की जिसमें कहा गया है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। आर्य समाज के सभी सिद्धान्त सत्य पर

आधारित हैं जो हमें सुख देते हैं। हमें उन्हें सभी मनुष्यों तक पहुंचाना चाहिये। **आचार्य जी ने कहा कि हमारे पास वेद का खजाना और सत्य का मार्ग है।** हमें इस पर चिन्तन कर संसार को इससे लाभान्वित करना चाहिये। आचार्य जी ने उदाहरण देकर समझाते हुए कहा कि एक अन्धा व्यक्ति कुंए के सामने से गुजर रहा है। हमारा कर्तव्य है कि हम उसे कुंए में गिरने से बचायें। यदि हम उसे नहीं बचायेंगे तो पाप के भागी होंगे। वेद का ज्ञान ऐसी आंख हैं जो अन्धकार व अज्ञान में पड़े हुए लोगों को कुंए में गिरने से बचा सकती है। विद्वान आचार्य जी ने कहा कि स्वतन्त्रता के आन्दोलन में आर्यसमाज के अस्सी प्रतिशत लोगों की भागीदारी थी जिससे देश आजाद हुआ। आचार्य जी ने यह भी कहा कि किसी भी व्यक्ति से यदि आर्यसमाज की चर्चा करते हैं तो वह कहता है कि उसके परिवार का पुराना अमुक अमुक व्यक्ति आर्यसमाजी था। यह आर्यसमाज की महत्ता का प्रकाशक है। आचार्यजी ने कहा कि आज विज्ञान का युग है अतः हमें अपनी मान्यताओं को सत्य, ज्ञान व विज्ञान की कसौटी पर कसते रहना है। उन्होंने कहा कि आज हम यहां स्वामी दीक्षानन्द जी की जयन्ती मना रहे हैं। आज हमें उनके स्मृति दिवस पर यह संकल्प लेना चाहिये कि हम आर्यसमाज की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचायेंगे और समाज से सभी प्रकार के भेदभाव दूर करेंगे।

आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि पुराने समय में आर्यसमाजियों की समाज में गौरवपूर्ण स्थिति थी। अनेक प्रमाण है कि यदि किसी न्यायालय में कोई आर्यसमाजी गवाही देता था तो न्यायाधीश महोदय आर्यसमाजी की गवाही को सत्य मानकर फैसला आर्यसमाजी की गवाही के अनुसार करते थे। **इसका कारण था कि आर्यसमाजी कभी झूठ नहीं बोलते थे।** आज स्थिति ऐसी नहीं है। आज हमें अपनी पूर्व स्थिति में लौटने की आवश्यकता है। **आचार्यजी ने कहा कि देश में पाखण्ड और अंधविश्वास बढ़ रहे हैं। मनुष्य समाज को प्रकाश की ओर केवल आर्यसमाज ही ले जा सकता है। उन्होंने कहा कि ऐसे व्यक्ति तैयार करें जो आर्यसमाज को गतिशील कर सके।** श्री आशीष दर्शनाचार्य और डा. राजेन्द्र विद्यालंकार के व्याख्यानों की ओर संकेत कर महामहिम राज्यपाल जी ने कहा कि इनके द्वारा व्यक्त विचारों पर चिन्तन करें। आचार्यजी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द तथा महात्मा फूलसिंह जी आदि ने गुरुकुल परम्परा को जन्म दिया। आज का समय इस विषय में चुनौतीपूर्ण है। विवेक के साथ हमें समस्याओं को समझना होगा। **सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्द द्वारा वर्णित गुरुकुल की परम्परा लुप्त नहीं होनी चाहिये। गुरुकुल की परम्परा को जीवित रखने का आचार्यजी ने आह्वान किया।** उन्होंने धर्मप्रेमी श्रोताओं से पूछा कि क्या आप में से किसी के बच्चे गुरुकुल में पढ़ते हैं। इसका रास्ता क्या है? **शिक्षा की आर्ष परम्परा को आप जीवित रखें। इसके लिए गुरुकुलों को दान दिया करें। वेदों का स्वाध्याय कर वेद से जुड़े रहें।** उन्होंने बताया कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र 34 वर्षों से देश व समाज की सेवा में प्रयासरत है। इस गुरुकुल में छः सात प्रान्तों के बालक आर्ष परम्परा से अध्ययन करते हैं। हम बच्चों को यहां निःशुल्क पढ़ाते हैं। समाज के जो बालक आर्यसमाज व वेद के प्रचारक बनना चाहते हैं उन्हें आप हमारे पास भेजें। बालकों की शिक्षा व उनके वस्त्र, पुस्तकें, भोजन व अन्य सभी सुविधायें हमारे यहां निःशुल्क हैं।

आचार्यजी ने आर्य भजनोपदेशक डा. कैलाश कर्मठ जी की चर्चा करते हुए बताया कि उन्होंने कुरुक्षेत्र गुरुकुल में 150 प्रतिनिधियों के साथ एक भजनोपदेशक सम्मेलन किया था। उन्होंने कहा कि **आर्यसमाज का ग्रामीण क्षेत्रों में जो प्रचार प्रसार हुआ है उसका सर्वाधिक श्रेय आर्यसमाज के भजनोपदेशकों को ही**

है। आज वह परम्परा समाप्त हो गई है। आज हमारी सार्वदेशिक सभा व अन्य प्रतिनिधि सभाओं के पास कितने भजनोपदेशक व उपदेशक हैं, शायद् एक भी नहीं है। एक समय था जब कि आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब में 80 भजन–मण्डलियां होती थीं और लगभग 150 उपदेशक होते थे। हमारे पं. सत्यपाल पथिक जी भी उनमें से एक हैं। आचार्य जी ने आगे कहा कि हम अपने बच्चों को गुरुकुल व आर्यसमाजों में नहीं भेजते। अपने बच्चों व परिवार को आर्यसमाज में लाना नहीं और दूसरों को आर्यसमाज में घुसने नहीं देना, इस प्रकार की हमारी प्रवृत्ति व मनोवृत्ति है। ऐसे लोग समाज में है। उन्होंने पूछा कि ऐसा कब तक चलेगा? पारिवारिक दायित्वों से मुक्त बुजुर्गों का धर्म बनता है कि वह आर्यसमाज में निवास किया करें। बच्चों व युवकों को जिम्मेदारियां दें और उनको प्रशिक्षित करें। आचार्य कुल व वैदिक परम्पराओं को बच्चों में बढ़ायें। आचार्य जी ने गर्व से कहा कि आर्यसमाज हमारी माता है। हमें इसकी हर प्रकार से रक्षा करनी है।

आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि जिस कुंए से पानी निकलता रहे और स्रोत से पानी न आता हो तो वह कुंआ कुछ दिन बाद सुखेगा ही। हम समाज के लिए जितना काम कर सकते हैं उतना हमें करना चाहिये। घर में अपने बच्चों के पालन की तरह आर्यसमाज में भी सहयोग करें। उन्होंने कहा कि अपने बच्चों को आर्यसमाज में भेजें तभी आर्यसमाज बचेगा। आचार्यजी ने अपने कुरुक्षेत्र के आर्ष गुरुकुल का परिचय दिया और नये भजनोपदेशक विद्यालय की स्थापना की जानकारी सभा में दी। उन्होंने कहा कि भजनोपदेशक विद्यालय का नया भवन आगामी 6 महीनों में बन जायेगा। इसमें सभी प्रकार के वाद्ययन्त्रों व उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था होगी। जो व्यक्ति भजनोपदेशक बनना चाहें उनके लिये निःशुल्क व्यवस्था है। आप इसमें हमारा सहयोग करें। उन्होने श्रद्धालुओं से एक भजनोपदेशक बनाने का संकल्प लेने को कहा। आचार्यजी ने कहा कि हमने आर्य भजनोपदेशक और वैदिक विद्वान प्रचारक बनाने की निःशुल्क व्यवस्था कर दी है।

इस अवसर पर तपोवन विद्या निकेतन तथा द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल के बच्चों की ओर से अनेक प्रशंसनीय प्रस्तुतियां हुईं। बच्चों के नृत्य भी हुए। अनेक महानुभाव सम्मानित हुए जिनमें स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, आचार्य आशीष जी, डा. अनिल आर्य, डा. राजेन्द्र विद्यालंकार, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, आश्रम को सहयोग करने वाली अनेक विभूतियों सहित गीतकार राजेन्द्र काचरू भी सम्मिलित हैं। महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी का भी सम्मान किया गया। डाटाविन कम्पनी की ओर से अपनी 10 टैबलेट भी तपोवन विद्या निकेतन के बच्चों को वितरित की गईं। आश्रम द्वारा प्रकाशित सन्ध्या हवन विषयक पुस्तक का लोकार्पण माननीय राज्यपाल महोदय के करकमलों से सम्पन्न हुआ। डा. कैलाश कर्मठ सहित आचार्य आशीष और डा. राजेन्द्र विद्यालंकार जी के प्रभावपूर्ण सम्बोधन हुए। स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के स्मृति दिवस के अवसर पर अग्निहोत्री धर्मार्थ न्यास और वैदिक साधन आश्रम तपोवन की ओर से श्री श्रद्धानन्द शर्मा, चौधरी लाजपत राय, श्री राजेन्द्र काचरू व आचार्या डा. अन्नपूर्णा जी को सम्मानित किया गया। वैदिक साधन आश्रम तपोवन के यशस्वी मन्त्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा तथा यशस्वी प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी ने अपनी टीम के साथ आगन्तुक सभी श्रद्धालु व ऋषिभक्त अतिथियों की सुख सुविधाओं का रात दिन तत्पर रहकर पूरा ध्यान रखा जिसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं।

प्रारब्ध का फल नाश

प्रभु आश्रित जी महाराज

अब तुम्हारा प्रश्न केवल यह रह गया है कि क्या हम कर्मफल का नाश कर सकते हैं, या उसे दबा सकते हैं? इसका उत्तर भी ध्यान से सुनो! तुम देखते हो कि जब किसी नगर में प्लेग जैसी कोई प्राण–हारिणी संक्रामक बीमारी फैल जाती है, तो डाक्टर लोग सर्व–साधारण से यह कहते हैं कि इसकी रोक–थाम के लिए टीका लगवाना चाहिए, जिस से प्लेग का शिकार हो जाने के भय से सुरक्षित रह सकें। इस टीके का परिणाम यह होता है कि टीका लगवाने वाले के शरीर में नश्तर अथवा सुईदार पिचकारी द्वारा प्लेग के कीटाणु (कीड़े) उत्पन्न (पैदा) कर दिये जाते हैं। ये कीड़े जब अपना प्रभाव पैदा करते हैं तो वह स्थान फूल जाता है। मनुष्य को हल्का–सा ज्वर भी हो जाता है, जो उसे कुछ दिन के लिए खाट पर डाल देता है। प्रकृति ने हम सबके शरीरों में प्रत्येक रोग के आक्रमण का डटकर सामना करने की शक्तियां गुप्त रखी हैं। मनुष्य स्वभाव भी एक निपुण चिकित्सक है, जो उसके शरीर के प्रत्येक छोटे–मोटे रोग की साधारण तथा प्रारम्भिक चिकित्सा तो सदैव अपने आप ही करता रहता है, परन्तु चिकित्सा का शरीर के स्वामी आत्मा को प्रायः पता भी नहीं लगता। रोग का आक्रमण होते ही यह सब शक्तियां एकत्रित तथा जागृत हो जाती हैं और तुरन्त ही रोग के इन कीटाणुओं का विध्वंस कर देती हैं और वही एकत्रित शक्तियां प्लेग के आक्रमण से शरीर को सुरक्षित रखने के लिए सावधान हो जाती हैं। इस प्रकार वह टीका लगवाने वाला मनुष्य प्रायः अगले दिन ही उस हल्की–सी प्लेग से स्वस्थ होकर निश्चित रूप से अपना काम–काज करने लगता है। वह नगर में फैली हुई प्लेग से प्रथम तो सुरक्षित ही रहता है परन्तु यदि कभी प्लेग का उस पर आक्रमण होता भी है तो उसकी रक्षक शक्तियां तुरन्त उस प्राणघातक भय से उसे बचा लेती है। कारण यह है कि उसने पहले से उस आने वाले दुःख का प्रतिरोध या प्रायश्चित्त कर लिया है, जिसने अपने प्रभाव से दुःख को दबा लिया अथवा हल्का कर लिया है।

"दूसरे शब्दों में इसे ही यूं समझो कि एक पुरुष प्रतिदिन व्यायाम करता है, बलदायक आहार खाता है। इन साधनों से उसने अपने शरीर को अच्छा पुष्ट तथा बलवान् बना लिया है। अब यदि उसे कोई साधारण सा रोग आ चिमटे तो वह केवल अपनी शारीरिक–शक्ति के प्रभाव से, जो उसने अपने शरीर में केन्द्रित कर रखी है, बिना किसी चिकित्सा अथवा औषधि पर कोई पैसा लगाये या अपने आप रोग–शैय्या पर पड़े ही, उस रोग पर विजय पा लेता है और उसे पराजित करके दूर भगा देता है। वह किसी रोग को रोग ही नहीं समझता। परन्तु वही रोग यदि किसी दुर्बल रोगी को चिमट जाता है तो उसे कई दिन खटिया से उठने नहीं देता, उसके सब कामकाज बन्द करा देता है और चिकित्सा तथा औषध आदि के भार (बोझ) से उसका कचूमर निकाल देता है।

जिस पुरुष ने पहले ही कुछ कष्ट करके अस्त्र–शस्त्र चलाने में निपुणता प्राप्त कर ली है, उसे किसी शत्रु का सामना करने में कुछ भी कष्ट नहीं होता, वरन् आनन्द आता है। वह उसे एक साधारण–सा खेल समझता है। जो भी शत्रु उसकी हत्या करने अथवा उसे पराजित करके उसकी धन–सम्पत्ति हरण करने की नीयत से आता है, उसका वह अपने सुरक्षित शारीरिक बल

तथा अस्त्र–शस्त्र, इष्ट–मित्र आदि को संगृहीत शक्ति से सहज में ही सामना करके अपनी और अपने धन–माल तथा बाल–बच्चों की रक्षा कर सकता है और इस प्रकार अपने सभी दुःखों तथा उनसे होने वाले कष्टों को दबा सकता है अथवा हल्का कर सकता है।

शारीरिक रोगों का प्रतिरोध करने की शक्ति उत्पन्न करने के लिए ब्रह्मचर्य, उचित आहार–विहार, व्यायाम तथा स्वास्थ्य की रक्षा के अन्य नियमों का पालन करना अति आवश्यक है। पाप तथा दुष्कर्मों से पैदा होने वाले दुःखों का सामना करने के लिए यथार्थ शक्ति ईश्वर–भक्ति से ही प्राप्त हो सकती है। भक्ति से न केवल मानसिक बल ही मिलता है, वरन् ज्ञान भी उत्पन्न होता है।

देखो! वृक्ष एक बीज से पैदा होता है और वही वृक्ष फिर और सहस्रों बीज पैदा करता है। इसके अतिरिक्त उस वृक्ष से फूल, पत्ते, छाया, ईंधन इत्यादि अन्य अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। फिर बहुत से फल ऐसे होते हैं, जिन्हें बार–बार बोने अथवा जिनके सम्बन्ध में अन्य आवश्यक क्रियाएँ करने की आवश्यकता पड़ती है जैसे गेहूं, चना, चावल आदि अन्न। परन्तु कुछ वृक्ष ऐसे हैं जो एक बार ही बोने से उगते तो निःसन्देह धीरे–धीरे हैं और फल भी देर से लाते हैं, परन्तु जब एक बार फल देने लगते हैं, तो बराबर प्रतिवर्ष नियत समय पर अनुकूल अवस्था रहते हुए वर्षों तक फल देते रहते हैं, जैसे कि आम का वृक्ष। उसकी गुठली एक ही बोई जाती है। प्रायः फल भी वह ५–७ वर्ष में देता है, परन्तु फिर प्रतिवर्ष अनुकूल समय आने पर देर तक फूल और फल देता रहता है। फलों के साथ ही साथ उसकी छाया तथा काष्ठ भी मिलता रहता है। इसे तुम पेंशन के समान समझो।

इसी प्रकार कुछ कर्म तो ऐसे होते हैं जिनका फल प्राप्त करने के लिए उन्हें बार–बार खाद व पानी की आवश्यकता होती है और कुछ ऐसे हैं जिनका करना, यों समझो आम के वृक्ष के समान, समय–समय पर बार–बार अपना फल देता रहता है। परन्तु आम के फल में तो गुठली होती है, यहां वह भी नहीं है या यों समझो कि आम के आम हैं और गुठलियों के दाम।

तीसरा कर्म एक और भी है। वह सन्तरे के समान है। आम की सुगन्धि तो वायु–मण्डल में केवल बौर आने के समय फैलती है, परन्तु संतरे की सदैव विद्यमान रहती है। प्रत्येक वृक्ष में २००–२५० संतरे लगते हैं, प्रत्येक संतरे में १०–१२ फांकें और प्रत्येक फांक में २–३ बीज होते हैं।

फिर जिस–जिस अंग से कर्म किया जाता है उस के फल में भी भेद पड़ता रहता है। हरकारे अथवा दूत को देखो! उसका मुख्य कर्म पैरों और टांगों से होता है। वह पैरों और टांगों के कार्य से ही पेट भरता है, पर साथ ही उसके अन्य शरीर की अपेक्षा उसकी टांगें और पैर भी अधिक दृढ़ होते हैं। बढ़ई हाथ से काम करके प्रायः एक–दो रुपया प्रतिदिन कमा लेता है, आप भी खाता है, कुटुम्ब की भी पालना करता है। परन्तु इसके साथ ही अपने हाथों की दक्षता, फुर्ती और सफाई भी बढ़ाता चला जाता है, जिससे उसके काम में अधिक निपुणता आती है। चार दिन के लिए काम छोड़ दे, सब तेजी और सफाई मारी जाएगी। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य प्रधानतया अपनी जिस–जिस इन्द्रिय से रोजी कमाता है, वही इन्द्रिय विशेषतया पुष्टि पाती रहती है जैसे उपदेशक, लैक्चरार, वकील, अध्यापक इत्यादि जिह्वा से अधिक काम लेते हैं। मस्तिष्क (दिमाग) से कमाने वालों में से मोटर बनाने वाले फोर्ड साहिब के विषय में ही जरा विचार करो, जिसका कार्यालय ३४ मील में फैला हुआ है। दो लाख आदमी काम करते हैं, जिनकी औसत मजदूरी २५ रुपये दैनिक है अर्थात् ३० लाख रुपया

प्रतिदिन मजदूरों के वेतन में बंट जाता है और अन्य व्यय रहे अलग। १२ हजार मोटरें प्रतिदिन तैयार होती हैं। अब उनकी आय का तुम स्वयं अनुमान कर सकते हो। हां यह और बात है कि इस अपार धन भोग का उन्हें इतना भी अधिकार न हो कि कुछ छटांकों से अधिक आहार पचा सकें।

यह विचार श्रृंखला बहुत बढ़ती जा रही है, परन्तु तुम्हें यह बताने का प्रयत्न कर रहा हूं कि कर्म अनेक प्रकार के होते हैं। पूर्वले जन्म में किए हुए कर्मों के फलों को मनुष्य नए कर्मों से दबा सकता है, अथवा अपने अन्दर उनके प्रतिरोध की शक्ति संचार करके किसी पाप से पैदा होने वाले दुःख का सामना करने में यों सुगमता उत्पन्न कर सकता है कि उसको कष्ट इतना अधिक अनुभव न हो जितना कि वह दुःख है।

पुत्र—मानो मनुष्य अपने किए हुए कर्मों को मिटा सकता है और उनका नाश भी कर सकता है। परन्तु मैंने तो यह पढ़ और सुन रखा है कि जैसी करनी वैसी भरनी।

बोए पेड़ बबूल के तो आम कहां से खाए या जौ बोओ तो जौ काटो और गेहूं बोओ तो गेहूं। कभी किसी को कर्मों के फल से निश्चिन्त नहीं रहना चाहिए। हर हालत में अपने किए हुए शुभ—अशुभ और भले—बुरे कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा। जिस मनुष्य ने बुराई का बीज बोया, बुराई की और फिर वह यह आशा रखता है कि मुझे उसका फल शुभ तथा कल्याणकारी मिलेगा, उसका यह विचार भ्रम तथा झूठा, निस्सार और कल्पना—मात्र है।

आगे के लिये

एक राज्य में यह नियम था कि जो राजा दस वर्ष राज्य कर लेता था उसे वन भेज दिया जाता था। एक बार एक ऐसे राजा गद्दी पर बैठे। जो इस नियम से बहुत दुखी थे। वे सोचते रहते थे—यह सारा समान हमारे पास चार वर्ष के लिये है, दो वर्ष के लिये है, एक वर्ष के लिये है, छह मास के लिये है। दुःख से उनका खाना—पीना सभी बन्द था। एक दिन राजा के यहाँ एक महात्मा आ गये। महात्मा ने कहा, "राजन्, आप इतने दुःखी क्यों हैं?"

राजा ने कहा, "महाराज! छह मास के पश्चात् वन को भेज दिया जाऊँगा और राज्य के भोग पदार्थ छूट जायेंगे। तब मुझे बड़ा कष्ट होगा। इस कारण दुःखी रहता हूँ।" महात्मा ने कहा, "राजन्! इसके लिये इतना दुःख क्यों कर रहे हो? आपको छह मास के बाद जिस वन को जाना है वहां अभी से पदार्थ धीरे—धीरे भेज देते ताकि वहाँ कष्ट न हो।"

राजा ने वैसा ही किया और वन में आ आनन्द भोगने लगा। इसका आशय यह है। कि इस जीवात्मारूपा राजा की बदली कुछ दिनों के पश्चात् अन्य योनियों में हुआ करती है। यह प्राणी मनुष्य शरीररूपी पदार्थ छूटता जान कर दुखी होता है कि जाने दूसरे जन्म में मनुष्य शरीर मिले या नहीं। महात्मा ने इसके लिये बतलाया कि यज्ञादिक तथा दान धर्म द्वारा क्यों न तू अपने पदार्थ धीरे—धीरे पहुँचा दे ताकि तुम्हें पुनर्जन्म में सम्पूर्ण पदार्थ दोबारा प्राप्त हों।

एक कवि का वाक्य हैः—
धर्माथेकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम्।।

फल— मनुष्य को इस संसार में रहते हुए धर्म—कर्म करने का समय निकाल लेना चाहिए। अन्यथा परलोक में खाली हाथ जाने यानी धर्म कर्म रहित जाने वाले का कोई महत्त्व नहीं।

पारसमणि की बटिया

—पं० शिव शर्मा उपदेशक

एक महात्मा ने एक साहूकार को पारसमणि की एक ऐसी बटिया दी कि जिसको लोहे से छु आते ही वह सोना बन जाता था। इसके साथ ही महात्मा ने यह कहा, "मैं तुम्हें यह बटिया सात दिनों के लिये दे रहा हूँ। सात दिन बाद मैं तुमसे यह ले लूँगा।" बटिया पाते ही साहूकार ने सोचा कि मेरे घर में लोहा सिवाय हँसिया, खुरपी, फावड़ा और कुदार के और कुछ है नहीं और बटिया केवल सात दिन के लिए मिली है। अतः बड़े शहरों से लोहा खरीद कर घर लेता आऊँ फिर उसे बटिया छुआ कर सोने का बना लूँगा। यह सोच एक आदमी कलकत्ता, दूसरा बाम्बे भेजा और उन आदमियों से कहा लोहा जल्दी खरीद कर लाना। दो दिन में गाड़ी कलकत्ता आई। दो—ढाई दिन में गाड़ी बम्बई पहुँची। वहाँ लोहा खरीदते उसे गाड़ियों में लदाते हुये दो दिन व्यतीत हो गये। पुनः दो दिन में यहाँ रेलगाड़ियाँ आई। इस भाँति छह दिवस बीत गये। सातवें दिन साहूकार ने मालगाड़ियों से माल उतरवा कर सोचा कि यदि पारस पत्थर छुआ देता हूँ तो तांतियां भील या दराव सरीखे डाकू सब लूट लेंगे, अतः लोहे को घर में भरकर तब पारस पथरी छुआऊँगा। यह सोच वह बैलगाड़ियों में लोहा भराकर घर आया। मजदूर लोहा बैलगाड़ियों से उतार घर में भर रहे थे। यह समय सातवें दिन बारह बजे रात का था, तब तक महात्माजी बटिया लेने आ गये। साहूकार ने महात्माजी का बहुत आदर—सत्कार किया। महात्माजी ने कहा, "वह बटिया लाइये।" साहूकार ने कहा, "महाराज! अब तक तो मैं लोहा ही खरीदता रहा, कुछ समय गम खाइये। महात्माजी ने कहा, "मैं एक मिनट भी नहीं गम खा सकता। बटिया लाइये।"

साहूकार ने कहा, "महाराज! अच्छा मैं अभी जाकर लोहे में छुआ देता हूँ। "महात्माजी ने कहा, "बस आपकी अवधि हो गई, अब मुझे बटिया दे दीजिये।" साहूकार ने कहा "अच्छा, मैं यह लोहा छुआ लेता हूँ।" महात्मा ने उससे बटिया छीन ली। महाशयो! दृष्टान्त तो यह हुआ, इसका आशय यह है कि जीवात्मा रूप साहूकार को परमात्मा रूपी महात्मा ने यह शरीर रूपी पारसमणि पत्थर सात दिन के लिये (सात दिन का तात्पर्य यह है कि दिन सात ही होते हैं) दी थी कि इस पारसमणि से माया—जंजाल विषयों से अलग हो मोक्ष रूपी सोना बना ले पर यह जीवात्मा रूपी साहूकार सातों दिन यानी सदैव लोहा ही खरीदता रहा अर्थात् विषयों में ही फँसा रहा। अवधि पूरी होने पर, जब महात्मा इन से, बटिया लेने गया, तब कहते हैं "परमेश्वर दो वर्ष या एक वर्ष या छह मास की आयु दे, तो हम कुआँ बनवा लें, यज्ञ कर लें, योग साधन कर लें।" परन्तु मृत्यु का समय आने पर उससे एक मिनट की भी मोहलत नहीं मिल सकती। जैसा किसी कवि ने कहा हैः—

कल करन्ता आज कर और आज करन्ता अब।
छिन—छिन आयु घटत है फेर करैगा कब?

फल— मनुष्य संसार में ऐसा रमता है कि वह धर्म कर्म के लिए समय नहीं निकाल पाता। ऐसे कामों के लिए वह कल पर निर्भर रहता है। पर यह कल कभी नहीं आता। अतः समय रहते ही धर्म—कर्म भी करना चाहिए।

ईश्वरीय-व्यवस्था

—डॉ० सुधीर कुमार आर्य

वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं संयम्य च मनस्तथा।
सर्वान् संसाधयेदर्थानक्षिण्वन् योगतस्तनुम्।।

ब्रह्मचारी पुरुष सब इन्द्रियों को वश में करके और आत्मा के साथ मन को संयुक्त करके योगाभ्यास से शरीर को किन्चित–किन्चित पीड़ा देता हुआ सब प्रयोजनों को सिद्ध करे।

एक बार की घटना है कि स्वामी दयानन्द के कुछ श्रद्धालु भक्तजन स्वामी दयानन्द को अजमेर से किसनगढ़ ले आये और सुखसागर के किनारे पर उनके रहने का प्रबन्ध कर दिया। यहाँ के निवासी पण्डितवर श्रीकृष्णवल्लभ जोशी तथा श्री महेशदास ओसवाल मुनिवर दयानन्द के परममित्र बन गये। महेशदास ने स्वामी जी का ससम्मान आतिथ्य किया।

किसनगढ़ का राजा वल्लभ सम्प्रदायी था। उसने स्वामी दयानन्द को भागवत का तीव्र आलोचक सुनकर, ऋषिवर के प्रचार कार्य में विघ्न डलवाने के लिए अनेक पण्डितों के साथ ठाकुर गोपालसिंह को भेजा। मनस्वी, मनोगत विचारों को जानने में चतुर एवं मर्मज्ञ स्वामी दयानन्द जी उनके भावों को जान गये।

स्वामी दयानन्द शौच–स्नानादि से निवृत्त होकर समाधि लगाकर एक काठ की चौंकी (पीठिका) पर बैठ गये।

ऋषि दयानन्द ने आये हुए मानव समूह को देखा तथा आने का कारण पूछा। तभी एक ब्राह्मण कुछ पृष्ठ निकालकर उलटने–पुलटने लगा, फिर स्वामी जी के सामने उन पृष्ठों को रखकर पढ़ने के लिए कहा। तब स्वामी जी कहने लगे कि आप स्वयं ही पढ़ें। ऋषि की बात सुनकर उस ब्राह्मण ने उन पृष्ठों को पढ़ा। जिसमें लिखा था कि वल्लभ सम्प्रदाय ही सबसे श्रेष्ठ तथा सर्वोत्तम है।

जब ऋषि दयानन्द ने यह सुना तब सदुक्तियों से प्रणामपूर्वक इसका खण्डन कर दिया। युक्तियों को तथा प्रमाणों को न जानने वाले वे पण्डित लोग लड़ाई करने के लिए आगे बढ़ने लगे। अपनी काष्ठ पीठिका से तत्काल उठकर स्वामी दयानन्द ने सिंह गर्जना करके उनको ललकारा तथा कहा कि मुझे अकेला जानकर एक कदम भी आगे मत बढ़ाना, मैं अकेला ही तुम सभी के दम्भनाश के लिए पर्याप्त हूँ। आइये शास्त्रार्थ तथा शस्त्रार्थ दोनों के लिए मैं तैयार हूँ और तुम्हारे अभिमान को मर्दन करने में समर्थ हूँ। ठीक उसी समय ईश्वरीय व्यवस्था से 30–40 माली वंशीय ब्राह्मण ऋषि दयानन्द की सहायता के लिए वहाँ आ गये। झगड़ा करने के लिए तत्पर वे दुष्ट उन पण्डितों को देखकर नौ दो ग्यारह हो गये।

शिक्षा– मननशील, कार्य करनेवाला व्यक्ति दुःख–सुख की एवं मान–अपमान की लड़ाई झगड़े की परवाह नहीं करता।

With Best Compliments From :
KAMAL PLASTOMET
930/1, Behrampur Road, Village Khandsa, Gurgaon-122 001 (Haryana), Tel. : 0124-4034471, E-mail : krigurgaon@rediffmail.com

देवी पर बली

—स्व० गंगा प्रसाद उपाध्याय

बहनो और भाइयो!

आप लोग मेले में लाखों की संख्या में एकत्र हुये हैं। कितने मार्ग का कष्ठ उठाकर और धन व्यय करके आये हैं। यहां आने का क्या प्रयोजन है? क्या आपने कभी सोचा है कि आप धर्म करने आते हैं या अधर्म? पुण्य कमाने आते हैं या पाप? आप तो यही समझ कर मेले में आते हैं कि देवी के दर्शन करेंगे। ईश्वर हम से प्रसन्न होगा। हमारा काम सिद्ध होगा। हमको सुख मिलेगा और हम स्वर्ग को जायेंगे।

परन्तु क्या आप ने सोचा है कि सबसे बड़ा धर्म "अहिंसा" है। "अहिंसा परमोधर्मः" हमारे वेद शास्त्रों में यही लिखा है। हमारे ऋषि मुनि, दानवीरों ने दूसरों को सुखी बनाने के लिये महान कष्ट उठाये हैं। महात्मा बुद्ध ने यही कहा। महात्मा गांधी का भी यही उपदेश है। अहिंसा परम धर्म हैं हिंसा घोर पाप है। जो अहिंसा करेगा उससे ईश्वर प्रसन्न होगा। जो किसी की हिंसा करेगा वह नरक को जायेगा।

अब बताइये कि आप देवी की मूर्ति के सामने पशु की बलि चढ़ाते है। यह तो हिंसा हुई। यह धर्म कैसा? क्या किसी जीव को मारने से आप को हत्या का पाप नहीं लगता।

आप तो देवी को माता कहते हैं। माता तो पुत्रों पर दया करती है। सबको प्यार करती है। वह कब चाहेगी कि उसकी सन्तान को कष्ट हो। उसका बलिदान हो। क्या देवीशेर, चीता या भेड़िया है जिसको जानवरों का मांस पसन्द हो? फिर आप स्वयं देख लें कि देवी तो मांस, खाती नहीं। पंडे पुजारी ही चट कर जाते हैं। उनको मजा आता है और पाप आप को लगता है।

ईश्वर तो सभी पर दया करते हैं। उनके लिये कीरी और कुञ्जर एक से, यह दयालु है। सबको बनाते हैं। सबका पालन करते हैं। आप ईश्वर के बनाये हम इन्हीं पशुओं को मारते हैं और झूट मूठ यह समझ लेते हैं ईश्वर इससे प्रसन्न होगा। ईश्वर तो सबका पिता है। आप उसके पुत्र पुत्रियां हैं और यह जानवर भी आपही के समान ईश्वर के बेटे—बेटियां हैं। अगर एक भाई अपने छोटे भाई को मार डाले तो पिता अवश्य ही नाराज होगा। इसी प्रकार अगर आप धर्म के नाम पर किसी पशु की जान लेंगे तो ईश्वर आपको अवश्य दण्ड देगा।

आप समझते हैं कि आपने मिन्नत मांगी और कहा कि हे देवीजी हमारा यह काम सिद्ध हो जाय। हम आपके नाम पर बकरा चढ़ा देंगे यह किसी ने आपको धोखा दिया है। ईश्वर हमारे कर्मों का फल देता है। जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। श्री तुलसी दास जी कह गये हैं

कर्म प्रधान विश्व कर राखा
जो जस करे सो तस फल चाखा

अब बताइये। आप हत्या कर रहे हैं। हत्या का फल क्या सुख होगा? पशुओं में वैसी ही जान है जैसी आप में है। आपके पैर में कांटा लग जाता है तो आप चीख—पुकार करते हैं। आफत मचा देते हैं पर आप पशु के गले पर छुरी चलाते हैं आपको तरस नहीं आता। आप कसाई नहीं हैं, परन्तु धर्म के नाम पर कसाई का काम करते हैं।

आप समझते हैं कि आपने जीव को मारकर अपने जीव की रक्षा की। अर्थात् जीव के बदले जीव दिया। यह भी अज्ञान का फल है। ईश्वर किसी के बदले किसी दूसरे को नहीं मारता। क्या यह हो सकता है कि चोरी करे

रामलाल और सजा मिले मोहनलाल को। ऐसा अन्धेर तो सरकार भी नहीं करती। ईश्वर तो दयालु भी है और न्यायकारी भी है और सर्वज्ञ भी। वह तो जानता है कि पाप किसने किया और सजा किसको मिलनी चाहिये। याद रखें जिसको आप मारते हैं उसका खून आपके सिर लगेगा और कोई पंडा पुजारी ईश्वर के कोप से आपको न बचा सकेगा।

मनुस्मृति में मनु महाराज ने बताया है कि–

अनुमन्ता विशसिता निहिन्ता क्रय विक्रयो।
संस्कर्ता चोपहर्त्त च खाद कश्चेति घातकः।।

कसाई आठ तरह के होते हैं। जो मारने की अनुमति दे वह भी कसाई जो शरीर को छेदन करे वह कसाई, जो प्राण ले वह कसाई। जो मांस बेचे वह कसाई, जो मांस खरीदे वह कसाई, जो मांस को पकावे वह कसाई, जो मांस परोसे वह कसाई, जो मांस खाये वह कसाई। अब सोचिये कि आप जो पशु की बलि चढ़ाते हैं, कसाई हुए या नही। मनु महाराज तो यही कहते हैं कि जो पशु की बलि चढ़ावे वह भी कसाई है और जो पंडे या पुजारी पशु को मारने की प्रेरणा करे वह भी कसाई हुये।

कुछ लोगों ने झूठ मूठ यह बात उड़ा रखी है कि जो पशु देवी को चढ़ाया जाता है, वह सीधा स्वर्ग को जाता है। यह मूर्खता की बात है। यदि पशु को देवी के नाम पर मारने से पशु स्वर्ग को जाय तो लोग अपने माता–पिता को बलि चढ़ाकर स्वर्ग को क्यों नहीं भेज देते।

यदि ऐसा होता तो स्वर्ग की प्राप्ति आसान हो जाती। लोग शास्त्र क्यों पढ़ते? ब्रह्मचर्य क्यों रखते? परोपकार क्यों करते? योग की साधना क्यों करते? एक छुरी से ही स्वर्ग का रास्ता खुल जाता।

प्यारे भाइयो ! आंख खोलो, सोचो और समझो, बुद्धि से काम लो और पशु बलि देकर पाप के भागी मत बनो। मन्दिरों के सामने खून की नदियां न बहाओ। तुम सोचो तो सही कि जब तुम किसी पशु को मारते हो तो वह कैसा तड़पता है। पर आप का हृदय पत्थर का हो जाता है। क्या स्वर्ग को जाने की यही रीति है? वेद में लिखा है– मित्रस्य चक्षुषा सर्वांणि भूतानि समीक्षन्ताय (यजुर्वेद)

सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखो। क्या तुम वेद की बात भी नहीं मानते? आज ही से प्रतिज्ञा करो कि अब कभी ऐसी निर्दयता का काम नहीं करेंगे। देखो ! तुम्हारे पूर्वज ऋषि मुनि तो चींटियों तक को खाना दिया करते थे। तुम भी पशु पक्षियों को रोटी देते हो। कुछ लोग नदियों की मछलियों को दाना डालते हैं कुछ लोग गाय को रोटी देते हैं और तुम कैसी सन्तान हो कि ईश्वर के नाम पर पशुओं का रक्त बहाते हो। पशु–बलि घोर हत्या है। घोर अधर्म है। इससे बचो और जो पशु बलि देते हैं उनको समझाओं कि वह ऐसा करने से बचे रहें।

ईश्वर आपको सद्बुद्धि दे।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में पधारने वाले सभी अतिथियों एवं साधकों से विनम्र निवेदन है कि वह अपने साथ अपना आई.डी. प्रूफ साथ लेकर आयें ताकि आश्रम में निवास करने में उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई न हो। तपोवन आश्रम का मेन गेट रात्रि 9 बजे बंद कर दिया जाता है यदि आप रात्रि 9 बजे के बाद आश्रम में निवास हेतु आ रहे हैं तो कृपया आश्रम के कर्मचारी श्री प्रकाश–8954361107 अथवा श्री जगमोहन–7830798919 पर पूर्व में ही सूचित कर दें ताकि आपके आवास एवं भोजन की उचित व्यवस्था की जा सके।

अधिक जानकारी के लिए आश्रम के सचिव से दूरभाष नं० 9412051586 पर वार्ता कर सकते हैं।

अंधविश्वास की काली छाया

—डॉ० महीप सिंह

यह लेख वर्ष 2005 में प्रकाशित हुआ था। भले ही घटना पुरानी है, परन्तु आज भी इस प्रकार के काण्ड दोहराये जा रहे हैं।

हाल ही में समाचार पत्रों में यह समाचार बहुत प्रमुखता से छपा कि दिल्ली के नांगलोई क्षेत्र में एक महिला ने ढाई वर्ष के एक बच्चे की बलि चढ़ा दी। इसी ढंग का एक समाचार झारखण्ड से है। वहां के एक प्रसिद्ध तांत्रिक खेपा बाबा ने अपनी तंत्र साधना की सिद्धि के लिए एक आठ वर्ष के बालक की बलि चढ़ा दी। इन दर्दनाक घटनाओं के साथ ही अनेक समाचार पत्रों में एक विज्ञापन भी छपा। विज्ञापन की भाषा देखने योग्य है "रुके हुए काम, बंधन खुलवाने के लिए १० गुना ज्यादा लाभ, १०१ प्रतिशत की गारंटी से २४ घंटे में लाभ। अगर आपका ज्योतिषियों या तांत्रिकों से विश्वास उठ गया है तो आप हमारे पास आएं। आपकी सभी मनोकामनांए पूरी हो जाएंगी।"

इस समय इस देश में तांत्रिकों, ज्योतिषियों, भविष्यवक्ताओं, सभी प्रकार की मनोकामनाओं को पूरा करने का दावा करने वाले बाबाओं का धंधा खूब चमका हुआ है। सुबह का अखबार खोलते ही उसमें से कुछ खास विज्ञापन नजर आते हैं। इनमें ज्योतिषी, तांत्रिक अथवा बंगाली बाबा का यह दावा बहुत बढ़—चढ़कर होता है कि आप अपनी किसी भी समस्या के लिए हमारे पास आइए। हम २४ घंटे में उसका हल निकाल देंगे। नांगलोई की महिला अपने पति के व्यवहार से दुःखी थी। वह अपनी समस्या का हल ढूंढने के लिए एक कथित तांत्रिक के पास पहुंच गई। ढोंगी तांत्रिक ने उससे यह कहा होगा कि पति को वश में करना है तो एक बच्चे की बलि दे दो।

तंत्र साधना करने वाले साधकों के मध्य यह मूढ़ विश्वास सदियों से व्याप्त है कि उनकी साधना बलि मांगती है। यज्ञों में पशुओं की बलि दिये जाने की परंपरा बहुत प्राचीन है। अश्वमेघ यज्ञ में घोड़े की बलि देने की चर्चा हमारे प्राचीन ग्रंथों में है। कुछ तांत्रिकों द्वारा नरबलि देने के उल्लेख भी प्राप्त होते हैं। झारखंड का खेपा बाबा भी उन्हीं तांत्रिकों में था जो यह मानता था कि साधना की सफलता के लिए नरबलि आवश्यक है। इसी विश्वास से प्रेरित होकर उसने आठ वर्ष के एक अबोध बालक की बलि चढ़ा दी। ये घटनाएं विरल नहीं हैं। आए दिन ऐसे समाचार मिलते रहते हैं, जब तथाकथित तांत्रिक या तो स्वयं नरबलि देते हैं अथवा किसी स्त्री या पुरुष से कहते हैं कि अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए ऐसी बलि दे दो। इन सभी बातों की जड़ में यह अंधविश्वास बैठा हुआ है कि एक पराशक्ति है। साधना द्वारा उसे वश में किया जा सकता है और सभी प्रकार की सिद्धियां अर्जित की जा सकती हैं। इन सिद्धियों से किसी के भी कष्ट दूर किए जा सकते हैं। ऐसे लोग चमत्कारी सिद्धियों से मनुष्य के अतीत, वर्तमान और भविष्य को पूरी तरह बता सकने का दावा करते हैं। किसी असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति को पूरी तरह निरोग कर देगा, संतानहीन को संतानवान बना देना अथवा किसी निर्धन व्यक्ति के सम्मुख धन का ढेर लगा देना तो इनके बाएं हाथ का खेल समझा जाता है।

चमत्कारपूर्ण घटनाओं से हमारा पौराणिक साहित्य, लोक साहित्य और लोकमानस भरा पड़ा है। आधुनिक युग के सभी वैज्ञानिक चिंतन और तर्कशीलता के बावजूद आज भी इस देश में ऐसे चमत्कारी बाबाओं की कमी नहीं है जो अपने लंबे चोगे से मनचाही वस्तु निकाल देते हैं और सामान्य रोग ही नहीं, पढ़े—लिखे बुद्धिजीवी भी उनकी कथित सिद्धियों के सामने नत—मस्तक होते है। ज्योतिष का धंधा प्राचीन समय में भी बड़ा फलदायी रहा होगा। आज इस धंधे को सभी प्रकार की आधुनिक प्रचार सुविधाएं मिल गई हैं। आज कोई भी ज्योतिषी या तांत्रिक अपनी योग्यता का कैसा भी दावा करते हुए समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर अपना प्रचार कर सकता है, वैसे ही जैसे साबुन, टूथपेस्ट, साइकिल या घड़ी बेचने वाले

करते हैं। विज्ञापन में तांत्रिक तरह–तरह के दावे करते हैं।

सभी ज्योतिषियों और तांत्रिकों के दावे लगभग एक ही ढंग के होते हैं, क्योंकि जनसाधारण के कष्ट भी लगभग एक जैसे होते हैं। कोई किसी भयंकर बीमारी से पीड़ित है, कोई संतान सुख से वंचित है, किसी का व्यवसाय ठीक नहीं है इसलिए वह आर्थिक संकट में है, कोई गृहकलह से पीड़ित है, कोई अपने शत्रु पर विजय पाना चाहता है और कोई अपने प्रेम प्रसंग को सफल बनाना चाहता है। मुझे गत दिनों के समाचार पत्रों में ज्योतिष का व्यवसाय करने वालों के दो–तीन पर्चे मिले हैं। उनमें से एक में लिखा था: 'ज्योतिष और तंत्र द्वारा पल भर में समाधान। नक्कालों से सावधान। कलयुग तारणी मां गंगा माई, विश्वास में ही शक्ति–भक्ति है। आपकी हर समस्याओं का निवारण असम में स्थापित तांत्रिक शक्ति मां कामख्या द्वारा मां के दरबार में ही समय से पहले, भाग्य से अधिक मिलता है। रुके काम बनते हैं। मनचाहा प्यार, कारोबार में रातोरात कामयाबी, नौकरी में तरक्की, विदेश यात्रा, राजनीतिक अवसर, संतान प्राप्ति, नवग्रह शांति...। आपकी हर समस्या का समाधान पक्का है।

एक अन्य पर्चे में ऊपर की सभी व्याधियों के साथ ही मन का भ्रम, कोर्ट–कचहरी, पित्त दोष आदि संकटों से समाधान की बात कही गई थी। एक विशेष बात यह है कि जो लोग अन्य ज्योतिषियों और तांत्रिकों द्वारा किए गए उपायों से निराश और असफल हो गए हैं, ऐसे व्यक्ति एक बार अवश्य मिलें। इन महोदय ने यह दावा भी किया है कि मिलने पर ये सभी संकट केवल तीन दिन में दूर कर देते हैं। मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि विदेशों में जहां भी भारतीय गए हैं उन्हीं के साथ ज्योतिष और काले इल्म का व्यवसाय करने वाले भी पहुंच गए हैं। मेरे पास ब्रिटेन, कनाडा और अमेरिका जैसे देशों से प्रकाशित होने वाले कुछ पंजाबी साप्ताहिक पत्र नियमित आते हैं। इन देशों में पंजाबी मूल के लोग बड़ी संख्या में बसे हुए हैं। इन पत्रों में ज्योतिषियों, तांत्रिकों, योगियों, काले इल्म के माहिर पीरों, बाबाओं के बड़े–बड़े विज्ञापन छपते है।

इन लोगों में अब महिलाएं भी शामिल हो गई हैं। ये 'देवियां' अथवा 'बहन जी' अपनी तंत्र शक्ति से लोगों, विशेषरूप से महिलाओं का इलाज करती हैं। इन विज्ञापनों को देखकर इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि यह धंधा वहां भारत से अधिक फल फूल रहा है। इस देश में प्रायः ऐसी चमत्कारी घटनाएं प्रचलित हो जाती हैं जिनके प्रभाव में समाज का बहुत बड़ा वर्ग आ जाता है। यहां कभी किसी स्टोव में देवता प्रकट हो जाता है, कभी गणेश जी की मूर्ति दूध पीने लगती है, कहीं किसी बच्ची में काली प्रकट हो जाती है और असंख्य लोग बहुमूल्य चढ़ावे लेकर उसकी पूजा–अर्चना करने लगते हैं। इन घटनाओं के पीछे छिपे रहस्य जब कभी खुलते हैं तो ज्ञात होता है कि कितने क्षुद्र स्वार्थों से वशीभूत होकर कुछ लोग ऐसे चमत्कारों की बाते फैलाते हैं। नरबलि देने या दिलवाने वाला कोई तांत्रिक बाबा जब पुलिस द्वारा पकड़ा जाता है, तो वह समाचार अखबारों में प्रकाशित होता है, किन्तु ऐसी असंख्य घटनाएं प्रकाशन में नहीं आती जिनमें लोग निरंतर ठगे जाते हैं।

यह बहुत आवश्यक है कि आम लोगों में अंधविश्वासों और कथित चमत्कारों के प्रति व्यापक जागरूकता उत्पन्न की जाए। यह कार्य सरकार भी कर सकती हैं। ऐसी ही एक संस्था 'तर्कशील सोसाइटी' पिछले कुछ वर्षो से पंजाब में कार्यरत है। इसका मुख्य उद्देश्य है आम जनता को अंधविश्वासों से मुक्त करके उन्हें तर्कयुक्त वैज्ञानिक सोच की ओर प्रेरित करना। भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, चुड़ैल, बेताल, जिन्न की कल्पना से संसार का कौन सा समाज मुक्त है? भूत–प्रेत की कालीछाया से हमारा समाज, विशेष रूप से ग्रामीण समाज बुरी तरह ग्रस्त है। तर्कशील लहर के कार्यकर्ता ढोंगी बाबाओं को चुनौती देते हैं और उनके पाखंडों का भंडाफोड़ करते हैं। व्यापक रूप से ऐसे अंधविश्वासों के विरुद्ध उभरी तर्कशील मानसिकता के प्रेरणास्रोत केरल के डॉ. कवूर जीवन भर अंधविश्वासों और तांत्रिकों के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। अंधविश्वासों एवं जड़ मान्यताओं से लड़ना एक सतत प्रक्रिया है। इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि पंजाब की तर्कशील लहर की भांति देश भर में ऐसे आंदोलन जन्म लें।

(लेखक प्रख्यात साहित्यकार है)

मण्डन के साथ-साथ खण्डन भी क्यूँ आवश्यक है?

डॉ० विवेक आर्य

एक पाठक ने मेरे लेख कलियुग में भगवानों का जुलूस पर प्रतिक्रिया दी है कि आपने साई बाबा का खंडन कर उनके करोड़ों भक्तों का दिल दुखाया है। आपको खण्डन नहीं करना चाहिए। एक उदाहरण देकर मैं अपनी बात को आरम्भ करना चाहता हूँ। एक आर्यसमाजी अध्यापक से यह शंका एक छात्र के अभिभावक महाशय ने की थी। अध्यापक ने उत्तर दिया कि इसका उत्तर समय आने पर आपको मिलेगा। संयोग से दो दिन के पश्चात् ही उस छात्र की परीक्षा थी। अध्यापक ने उस छात्र की उत्तर पुस्तिका में सभी गलत प्रश्नों को भी सही कर दिया और उसे अभिभावक को दिखाने के लिए कहा। अभिभावक ने जैसे ही उत्तर पुस्तिका में सभी गलत उत्तरों को सही देखा तो अगले दिन अध्यापक से वे मिलने आये। जब उन्होंने गलत उत्तर को भी सही करने का कारण पूछा तो आर्य अध्यापक ने बड़े प्रेम से उत्तर दिया। महाशय जी आप ही ने तो कहा था कि खण्डन मत किया करो केवल मण्डन किया करो, मैंने आप ही की बात का तो अनुसरण किया है। आपके बेटे के सभी सही के साथ–साथ गलत उत्तर को भी सही कर दिया, किसी का भी खण्डन नहीं किया। धार्मिक जगत में भी धर्म के नाम पर अनेक प्रकार की भ्रांतियाँ और असत्य बातों का समावेश कुछ अज्ञानी लोगों ने कर दिया है, यह कुछ–कुछ ऐसा है, जैसा कि एक किसान के खेत में फसल के साथ खरपतवार का भी उग जाना। अब आप बताएँ कि अगर किसान उस खरपतवार को नहीं हटायेगा, तो उसकी फसल का क्या हाल होगा? हिन्दू समाज में आध्यात्मिकता का भी वही हाल है, नाना प्रकार के अन्धविश्वास, नाना प्रकार के मिथ्या प्रपंच, नाना प्रकार के गुरुडम के खेल नाना प्रकार की देव देवताओं के नाम पर कहानियाँ रच ली गई हैं, जिनका सत्य से दूर–दूर तक भी किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। उनका अगर खण्डन नहीं करेंगे तो क्या करेंगे? महाशय जी चुप हो गये, उन्होंने सोचा कि बात तो सही है, खण्डन करना चाहे कड़वा हो मगर है तो आवश्यक।

यही शंका हमारे कुछ हिन्दू भाइयों को स्वामी दयानन्द से रहती है कि स्वामी जी को हिन्दू समाज की आस्था का खण्डन नहीं करना चाहिए था। स्वामी जी का उद्देश्य किसी की आलोचना अथवा विरोध करना नहीं था, अपितु जो कुछ भी सत्य है उसका मण्डन और जो कुछ भी असत्य है उसका खण्डन करना था। स्वामी जी से पूर्व भी अनेक आचार्यों ने समाज में सुधार की अपेक्षा से असत्य का खण्डन किया था। जैसे आदि शंकराचार्य, कुमारिल भट्ट, संत कबीर, संत दाइ, गुरु रामदास, गुरु नानक आदि। हिन्दू समाज मे गीता को विशेष मान प्राप्त है। कुरुक्षेत्र में महाभारत में अर्जुन के विचलित मन को सही मार्ग पर लाने वाले श्री कृष्ण जी महाराज ने गीता में स्पष्ट रूप से पाखण्ड का पुरजोर खण्डन किया है।

गीता के 16/4 श्लोक में श्री कृष्ण जी कहते हैं– "पाखण्ड, घमण्ड, अभिमान, क्रोध, कठोरता तथा अज्ञान असुरी सम्पत अर्थात् बन्ध का कारण है, जबकि इसी अध्याय के 16/1–3 श्लोक में अभय, अंतःकरण की शुद्धि, ज्ञान, योग, दान, दम, स्वाध्याय, तप, ऋजुता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शांति, चुगली न करना, प्राणियों पर दया, लोलुपता का अभाव, कोमलता,

चपलता का अभाव, तेज क्षमा, घृति, शौच, अद्रोह और निरभिमान देवी सम्पत अर्थात् मोक्ष का कारण है। गीता का पाठ करने वाला, गीता की पोथी बगल में दबाने वाला, गीता की कथा सुनाने वाला, गीता सुनने वाला, गीता रटने वाला, गीता का प्रचार करने वाला, गीता बाँटने वाला, गीता लिखकर उसका लॉकेट गले मे टाँगने वाले तो बहुत है पर गीता के इस सन्देश को जीवन में धारण करने वाले विरले ही मिलेंगे। जिसने आसुरी सम्पत को त्याग कर देवी सम्पत को नहीं अपनाया उसकी बेड़िया कभी नहीं कटेंगी? संसार के प्रत्येक भाग में पाखण्ड है। पाखण्डी नेता, पाखण्डी गुरु, पाखण्डी ब्राह्मण, पाखण्डी वैश्य, पाखण्डी कर्मचारी। सभी आसुरी मार्ग के अनुयायी है। स्वामी दयानन्द का उद्देश्य इसी आसुरी सम्पत का खण्डन और देवीय सम्पत का मण्डन था। जैसे गीता में पाखण्ड का स्पष्ट खण्डन हमें अपने अंतर्मन की शुद्धि, ज्ञान की शुद्धि, कर्म की शुद्धि, आचार की शुद्धि, व्यवहार की शुद्धि की प्रेरणा दे रहा है, वैसे ही स्वामी दयानन्द जी श्री कृष्ण जी महाराज के उपदेश को ययार्थ करने का ही उपदेश तो दे रहे हैं। यह सृष्टि का नियम है कि अज्ञानता के प्रचार–प्रसार को रोकने के लिए पाखण्ड की शल्य क्रिया करनी आवश्यक है चाहे मरीज को कष्ट हो, दुःख हो परन्तु है तो उसके हित के लिए ही। हिन्दू समाज आज पाखण्ड को त्याग कर धर्म मार्ग का पथिक बन जाये तो उसकी इतनी बुरी अवस्था सदा के लिए दूर हो सकती है।

मेरे जीवन का अनुभव

डॉ. विवेक आर्य

अपने जीवन में छात्रावस्था में मुझे तमिलनाडु एवं मध्यप्रदेश में पढ़ने का अवसर मिला। चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े होने के कारण आपको एक अनुभव बताना चाहता हूँ। तमिलनाडु में लोग बीमार मरीज को हस्पताल से जबरन छुट्टी करवा कर चर्च ले जाकर प्रार्थना करवाते है, जबकि मध्यप्रदेश में लोग बीमार मरीज को जबरन छुट्टी करवाकर तांत्रिक के यहाँ पर झाड़ा लगवाने जाते है। आम लोगों की भाषा में दोनों अंधविश्वास है मगर दोनों मे भारी अंतर है। मध्यप्रदेश के लोग अनपढ़ता एवं अज्ञानता के कारण अन्धविश्वास के फलस्वरूप तांत्रिक के पास जाते हैं, जबकि तमिलनाडु में लोग पढ़े–लिखे होने के बाद भी चर्च जाकर प्रार्थना से चंगाई रूपी अन्धविश्वास को मानते हैं। अनपढ़ता के वश अंधविश्वास का सहारा लेना अज्ञानता का प्रतीक है, जबकि शिक्षित होने के बाद भी अन्धविश्वास का सहारा लेना मूर्खता का प्रतीक है। अज्ञानी व्यक्ति में सुधार की निश्चित सम्भावना है, जबकि मूर्ख व्यक्ति में चाहे जितना जोर लगा लो, वह कभी बदलना नही चाहता है। खेद है कि अपने आपको ज्ञानी, विज्ञानी, तर्कशील, नास्तिक, साम्यवादी वगैरह–वगैरह कहने वाले केवल अज्ञानी लोगों के अन्धविश्वास को उजागर कर चर्चित होने में प्रयासरत रहते हैं, जबकि शिक्षित लोगों के विषय में रहस्यमय मौन धारण कर लेते हैं।

शिशुओं के रोग और उनके आयुर्वेदिक उपचार

डॉ० अजीत मेहता

चार साल पुरानी बिस्तर में मूत्र करने की आदत मधु के प्रयोग से चार दिन में ठीक

"६ वर्षीय एक लड़की को चार साल से बिस्तर में नींद में मूत्र करने की आदत थी। डॉ. अजीत मेहता की सलाहानुसार उसे रात में सोने से पहले प्रतिदिन एक चम्मच शहद एक कप पानी में घोलकर लगातार चार दिन तक पिलाया गया। उसकी चार साल पुरानी बिस्तर में मूत्र करने की आदत, मात्र चार दिन के इलाज से छूट गई और अब वह बिल्कुल ठीक है।"

अनुभव– श्री श्यामसुन्दर जी, केयर श्याम प्रेस, ४६७८ डिप्टी गंज, सदर बाजार– ११०००६।

बच्चों का बिस्तर पर मूत्र करना (Bed Wetting)

काले तिल को पीसकर चूर्ण बना लें। एक बड़ा चम्मच भरकर खूब चबा–चबा कर खाये। चबाने के बाद दूध पी लें। आवश्यकतानुसार तीन सप्ताह से तीन माह तक लें। छः साल के छोटे बच्चों को दो ग्राम मात्रा दें।

अनुभव– श्री गम्भीर सिंह संचेती, उदयपुर। एक १४ साल की बच्ची को बिस्तर पर पेशाब करने की पुरानी शिकायत थी। नींद में स्वप्न में उसे लगता था कि मूत्र बिस्तर पर हो जाता था। एक महीने में उपरोक्त प्रयोग से उस बालिका की बिस्तर पर मूत्र करने की शिकायत बिल्कुल दूर हो गई।

अन्य अनुभूत प्रयोग

(क) तीन साल से बारह साल के बच्चों को यदि बिस्तर पर पेशाब करने की आदत है तो एक चम्मच शहद रात को खाने के साथ दें या एक चम्मच शहद सोने से पूर्व खिलाएं। इससे उनकी मूत्राशय की मूत्र रोकने की शक्ति बढ़ती है और वे बिस्तर में मूत्र करना छोड़ देते है। यह सैकड़ों बच्चों पर आजमाया सफल प्रयोग है। छः वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों को एक चम्मच और छः वर्ष के अधिक उम्र वाले बच्चों को आप दो चम्मच मधु पानी में घोलकर दे सकते हैं। या वैसे ही चटा सकते हैं।

विशेष– यदि बच्चा रात में सोते में रो उठे तो समझ लें कि वह बदहजमी के कारण स्वप्न देख रहा है। आप उसे कुछ दिन मधु चटायें। कुछ दिन इसी प्रकार शहद के प्रयोग से बदहजमी दूर होकर स्वप्न में डरना और सोते में रो उठने की शिकायत भी दूर हो जाएगी। इसके साथ बच्चों के बढ़े हुए पेट का छोटा करने के लिए भी शीतल जल में शहद मिलाकर पिलाने से अवश्य लाभ होगा।

(ख) पांच–छः वर्ष के बच्चों की नींद में पेशाब करने की शिकायत दूर करने के लिए पाव दूध में तीन मुनक्के, बीच निकालकर, उबालें और वह दूध और मुनक्के बच्चे को तीन–चार दिन तक खिलायें। लाभ कम हो तो कुछ दिन और सेवन करवायें। बच्चा नींद में पेशाब करना बन्द कर देगा।

बच्ची के पेट में हवा

छः सात महीने के बच्ची का हवा से पेट फूल गया था। सुबह से उसका पेट साफ नहीं हुआ था। मां का दूध नहीं पी रही थी और जोरों

से रो रही थी। मैंने बार–बार सफल सिद्ध होने वाला निम्नलिखित प्रयोग किया–

"एक मूंग के दाने जितनी हींग लेकर हथेली में दो–तीन बूंद पानी डालकर, हींग को अंगुली से हथेली पर घिस लिया। फिर इस हींग के घोल (हींग व पानी मिश्रण) को उसी अंगुली से बच्ची की नाभि के अन्दर लगा दिया। नाभि पर और नाभि के नीचे वाले भाग पर हींग के पानी का लेप करते ही तत्काल हवा पास हुई और बच्ची दो मिनट में हंसने लगी।"

अनुभव– श्रीमती पुष्पा जी लोढ़ा, केयर श्री सोहन मलली लोढ़ा, मोती चौक, जोधपुर। श्रीमती पुष्पा जी के अनुसार यह हींग के पानी का लेप नाभि पर तथा नाभि के नीचे वाले भाग पर करना चाहिए, नाभि के ऊपर की तरफ वाले भाग पर कभी नहीं करना चाहिए।

विशेष– हींग के लेप की जगह पर बाद में थोड़ा देशी घी लगाने से हींग से लाली या छाला पड़ने की सम्भावना नहीं रहती।

शिशु की छाती में कफ जमना

"एक बार ६ महीने के बच्ची को बोतल में ठंडा दूध बार–बार देने से उसकी छाती जाम हो गई और हाथ पांव नीले पड़ गये। डाक्टर ने जवाब दे दिया था। तब मैंने बंगलापान का रस एक चम्मच, अदरक का रस एक चम्मच निकाल कर उसमें दो चम्मच शहद मिलाकर दवा बनाई और आधा चम्मच की मात्रा में बच्चे को दिया। देते ही बच्चे को उल्टी हुई और स्पंज जैसा कफ निकला। फिर एक चम्मच और दवा दी फिर कुछ स्पंज जैसा निकला। उल्टी के बाद शिशु ने आंखें खोल दी।"

अनुभव– यह अनुभव एक वयोवृद्धा स्वतंत्रता सैनानी दादी जी का है, जो अब नहीं रही है। उन्होंने बच्चों के हरे पीले पतले दस्त के साधारण किन्तु बार–बार अनुभूत इलाज मुझे बताये थे, जो सेवार्थ प्रस्तुत है–

शिशु के पतले हरे दस्त

यदि छोटे बच्चे को पतले दस्त आ रहे है और यदि दस्त हरे रंग के हो (हरे रंग के दस्त प्रायः सर्दी के कारण होते हैं) तो एक जायफल लेकर साफ सिल या बट्टे पर पानी की कुछ बूंदें डालकर चन्दन की तरह दो–तीन बार घिसें और बाद में एक मिश्री की डाली को लेकर इसी तरह घिसड़के देकर घिसें। तत्पश्चात् एक आध चम्मच पानी मिलाकर रख लें। बच्चे को साफ उंगली से चटाएं। ऐसा सुबह–शाम करने से सर्दी के कारण हो रहे हरे पतले दस्त बन्द होते हैं।

शिशु के पीले दस्त

यदि शिशु को पीले दस्त (गर्मी के करण) आ रहे हैं तो जरा सौंफ (दो ग्राम) का चूर्ण १०० ग्राम पानी में घोल लें। चाहे तो इतनी ही मिश्री को इसमें पीसकर मिला दें। एक घंटे बाद छानकर एक–एक चम्मच एक घंटे या हर दस्त के बाद पिलाएं। दस्त बंद होंगे।

विशेष– बच्चों के पेट का अफारा, अपच, दूध फैंकना, मरोड़ आदि शिकायतों में सौंफ के चूर्ण का उबाला पानी का प्रयोग देखें (स्वेदशी चिकित्सा सार)।

सौजन्य से–

THE HERITAGE SCHOOL
14/6, New Road, Dehradun, India

मूर्ति–पूजा की व्यर्थता

—इन्द्रजित देव

आर्यसमाज के यशस्वी दार्शनिक विद्वान् श्री पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी एक बार अपने उपदेश में ईश्वर की सर्वव्यापकता का मण्डन व मूर्ति–पूजा का खंडन कर चुके तो उस सभा में ही एक श्रोता ने खड़े होकर प्रश्न कर दियाः–

तुम वेद के ठेकेदारों से है यह मेरा सवाल,
कण–कण में खुदा है तो मूर्ति में क्यों नहीं?

श्री उपाध्याय जी ने प्रश्न सुनकर पूछा कि प्रश्न का उत्तर तुम्हारी तरह पद्य में दूँ या गद्य में? प्रश्नकर्ता ने कहा कि मजा तो इसी में है कि आप उत्तर भी मेरी तरह पद्य में ही दें। तब पं. जी ने उत्तर देते हुए कहाः–

तुम पुराण के ठेकेदारों को है यह मेरा जवाब,
मूर्ति में खुदा तो है पर तुम तो उसमें हो नहीं।

प्रश्नकर्ता पौराणिक था व उसका तात्पर्य यह था कि जब ईश्वर सर्वव्यापक है, तो वह मूर्ति में भी स्वतः सिद्ध होता है। जब मूर्ति में ईश्वर का होना सिद्ध हो गया, तो मूर्ति की पूजा ईश्वर की पूजा ही तो सिद्ध होती है। फिर मूर्ति पूजा का विरोध या निषेध क्यों किया जाता है? यह प्रश्न मुझसे तथा आर्यसमाज के अन्य उपदेशकों से आज भी श्रोता पूछते रहते हैं। ऐसे बन्धुओं से निवेदन यह है कि रूप, रंग व आकार आदि गुण प्रकृति से बनाए सृष्टि के दृश्यमान पदार्थों के हैं, ईश्वर के नहीं हैं। ईश्वर एक अति सूक्ष्म वस्तु है। वह दृश्यमान नहीं, साकार नहीं। साकार मूर्ति ईश्वर ने नहीं बनाई। ईश्वर ने प्रकृति से पत्थर बनाए तथा मनुष्य ने पत्थर से मूर्ति बनाई। प्रकृति, पत्थर व मूर्ति मे अपने अन्तर्यामी व सर्वव्यापक गुणों के कारण से ईश्वर इनमे है, यह सत्य है परन्तु इनमे से कोई भी ईश्वर नहीं है, यह भी सत्य है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि मूर्ति मे ईश्वर है, परन्तु मूर्ति मूर्ति ही है, वह ईश्वर नही है। सर्वव्यापक ईश्वर की मूर्ति बन ही नहीं सकती।

इसके विपरीत आत्मा ईश उपासना या भक्ति करना चाहता है। वह ईश्वर की तरह न तो अन्तर्यामी है तथा न ही सर्वव्यापक है। हृदय में ही आत्मा है। उसने ही ईश्वर के निकट बैठना है। उसका ईश्वर से मिलना, योग व अनुभूति हृदय से बाहर मूर्ति में विराजमान ईश्वर से कैसे होगी? दो व्यक्तियों का मिलना पृथक्–पृथक् स्थानों पर रहने से नही होता। एक व्यक्ति अपने घर में बैठा रहे तथा दूसरा व्यक्ति अपने घर में रहे तो दोनों का निकट होना सम्भव नहीं है। यहाँ नियम दो वस्तुओं पर भी लागू होता है। वस्तुएं स्वयं तो चलती नही क्योंकि वे जड़ अर्थात् चेतना रहित है। एक वस्तु को उठाकर दूसरी वस्तु के निकट रखा जाए, तभी उनका मिलन होगा। प्रत्यक्षतः भी हम देखते यही हैं।

आत्मा एक वस्तु है पर वह हृदय में ही है। जीवन भर वह व्यक्ति के शरीर मे, हृदय मे ही रहेगी। वह सर्वव्यापक नही। वह पत्थर की मूर्ति मे ही नही, अन्यत्र भी कहीं नही जाती, न ही जा सकती है। अतः आत्मा परमात्मा से मूर्ति मे मिल ही नही सकती। जब एक वस्तु हमारे निकटतम हो तो उसे प्राप्त करने के लिए दूर जाने की आवश्यकता ही कुछ नहीं। अल्पज्ञों को यह बात समझ में नहीं आती व वे मूर्ति को ही ईश्वर मानकर उसकी पूजा करते हैं। इन्हें पौराणिक कहा जाता है व वे स्वयं को सनातनी कहते हैं। अपनी बात की पुष्टि में ऐसे लोगों के द्वारा मान्यता प्राप्त ग्रन्थ गीता १५।६१ का ही प्रमाण

प्रस्तुत है—ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति। अर्थात् हे अर्जुन! ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में स्थित है।

यजुर्वेद चालीसवें अध्याय के पाँचवे मन्त्र में ईश्वर के विषय में कहा गया है—.........तद्दूरे तद्वन्तिके। तदन्तरस्य सर्वस्य तदुसर्वस्यास्य बाह्यतः। अर्थात् वह दूर है, वह सचमुच समीप है। वह भीतर है। वह सचमुच इस समस्त संसार के बाहर है। मूर्खों के विचारानुसार वह ईश्वर आत्मा से बहुत दूर है। ईश को वे पत्थरों में, पेड़ों में, चित्रों में, नदियों में, तीर्थों में, चौथे अथवा सातवें आसमान पर, कैलाश, क्षीर सागर तथा गोलोक में होना मानते हैं। किन्तु सच्चे आस्तिकों, योगियों व विद्वानों के विचार में वह ईश्वर तो हमारे भीतर आत्मा में ही मिलता है। हम उसमें है तथा वह हममें है। इस से अधिक निकटता—समीपता अन्य किन्हीं भी दो वस्तुओं में है नहीं। अतः ईश्वर को ढूँढने या प्राप्त करने के लिए आत्मा से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं। हमारा ईश्वर हमारी आत्मा में ही है। आत्मा बाहर मूर्ति मे जा नहीं सकती। उपासना का यही अर्थ है—निकट बैठना, और यह बैठना आत्मा में ही सम्भव है बाहर नही। बाहर आत्मा नहं है, न ही जीवन रहते आत्मा बाहर जा सकता है। मूर्ति बाह्य—वस्तु है। आंख एक बाह्य—इन्द्रिय है। वेदान्त—दर्शन के निम्नलिखित प्रमाणानुसार है ईश्वर अव्यक्त है अर्थात् वह इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता—तदव्यक्तमाह हि (३—२—२३)। कठोपनिषद् (२—३—१२) में स्पष्ट लिखा है कि वह परमात्मा वाणी, मन व नेत्रों से प्राप्त नहीं किया जा सकता— **नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुणा**

इस सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी व तर्क शिरोमणि श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी का यह कथन अत्यन्त उल्लेखनीय है—"हम ईश्वर को मूर्ति के भीतर व बाहर स्वीकार करते हैं। हम मूर्ति का खण्डन नहीं अपितु मूर्ति—पूजा का खण्डन करते हैं। जब ईश्वर सर्वत्र है तो मूर्ति के भीतर वाले ईश्वर को ही आप क्यों पूजना चाहते हैं? मूर्ति के बाहर वाले ईश्वर को आप क्यों पूजना नहीं चाहते? मान लीजिए, आप मुझे मिलने आए तथा मैं आपको अपने द्वार के बाहर ही मिल जाऊँ तो मुझसे मिलने में आपको अधिक सुविधा होगी अथवा मेरे भीतर होने पर होगी। भगवान तो सब जगह है, उससे बाहर ही मिल लीजिए, व्यर्थ में मूर्ति के अन्दर वाले के पीछे क्यों पड़े हैं? आप मूर्ति में दाखिल नहीं हो सकते और मूर्ति का ईश्वर बाहर नहीं आ सकता। क्यों मुश्किल में पड़ते हो? सरल काम कीजिए और मूर्ति से बाहर वाले की पूजा कर लीजिए।

मूर्ति में ईश्वर को व्यापक मानकर मूर्ति की पूजा करने वालों से हमारा यह अनुरोध है कि ईश्वर मूर्ति से बाहर भी सर्वत्र है व हमारे हृदय में तो वह अन्तर्यामी होने से अत्यन्त निकट है ही। बाहर इसे तलाश करने वालों को यह भजन विशेष सद्प्रेरणा देता है:

तेरे पूजन को भगवान् बना मन मन्दिर आलीशान।
तू ही निराकार भगवान् बना मन—मन्दिर....।

पुरोहितों की आवश्यकता

देहरादून जनपद की निम्न आर्य समाजों के लिए व्यवहार कुशल, मृदुभाषी पुरोहित की आवश्यकता है। निःशुल्क आवास व्यवस्था के साथ मानदेय कर्मकाण्डीय योग्यता व अनुभवानुसार देय होगा।

आर्य समाज का नाम	**सम्पर्क सूत्र एवं मोबाईल नम्बर**
आर्य समाज मसूरी	श्री नरेन्द्र साहनी, 9837056165
आर्य समाज चकराता	श्री एस.एस. वर्मा, 9410950159
आर्य समाज धर्मपुर	श्री शत्रुघ्न कुमार मौर्या, 9412938663

गृहस्थ आश्रम सुखों का आधार

—महात्मा दयानन्द जी

गृहस्थ आश्रम सब आश्रमों में श्रेष्ठ व ज्येष्ट है, सब आश्रमों की नामि है। इसका नाम है प्रजापति।

1. प्रजापति सबसे बड़ा, सबका पालन पोषण करने वाला होता है। यह बड़ा काम है।
2. श्रेष्ठ तब बनेगा जो शुभ काम करेगा निष्काम भाव से करेगा, उदर में विकार आ जाये तो सब रोग उपजते हैं। उदर में समान वायु का निवास है। यह समान वायु बिगड़ता है लोभ व मोह के कारण। समान वायु के बिगड़ने का कारण है अपान् वायु है अर्थात् त्याग। त्याग बिगड़े तो काम क्रोध विकृत रूप से उत्पन्न होते हैं।

3. गृहस्थ आश्रम क्या है?

धर्मानुसार सन्तान उत्पति करना एवं स्त्री—पुरुष का एक दूसरे के चरित्र की रक्षा करना गृहस्थ आश्रम का मुख्य उद्देश्य है।

4. संसार में दो विद्याएं है—

ब्रह्म विद्या तथा गृहस्थ विद्या। इन दोनों को जानना जरुरी है। ब्रह्म विद्या से आवागमन (जन्म—मरण) के चक्कर छूटते हैं तथा गृहस्थ विद्या से पितृ ऋण से उऋण होते है।

5. जो माता पिता की सेवा करता है वह राजा के एश्वर्य को पाता है और जो माता पिता को संताप देता है वह महान अभागा है। माता पिता की सेवा न करने वाले को अगले जन्म में धर्मात्मा माता—पिता, आज्ञाकारी सन्तान, वफादार नौकर, सच्चे मित्र, सुलक्षणी स्त्री व शुभ चिन्तक नहीं मिलते।

सेवा न करने के कारण— माता पिता की सेवा न करने के कारणों और उससे उत्पन्न परिणामों का निम्नप्रकार विश्लेषण किया जाता है।

काम— काम से वशीभूत व्यक्ति उपकारों को भूल जाता है जिसके परिणामस्वरूप स्त्री सुख न मिलेगा अथवा वियोगपूर्ण जीवन रहेगा। परिवार में रोग एवं कलह का वास होगा।

क्रोध— क्रोध से वशीभूत व्यक्ति का मिजाज सड़ियल होगा जिसके परिणामस्वरूप संतान सदैव अपमान करती रहेगी।

लोभ— लोभ के वशीभूत व्यक्ति बड़ों की आज्ञा की अवहेलना करेगा जिसके परिणामस्वरूप रोजगार के लिए मारा—मारा फिरेगा।

मोह— मोह से वशीभूत व्यक्ति सदैव रोगी रहेगा और संतान हीन होगा।

अंहकार— अहंकारी व्यक्ति की वाणी में मधुरता नहीं होगी जिसके कारण उसे समाज में सम्मान प्राप्त नहीं होगा।

6. गृहस्थ के ज्येष्ठ व श्रेष्ठ बनने के उपाय

1. समुद्र की तरह गंभीर बने।
2. पर्वत की तरह दृढ़ संकल्प वाले हों।
3. आकाश की तरह विशाल ह्रदय हों।
4. नदी की तरह कर्म निष्ठ त्यागी हों।
5. फलदार वृक्ष की तरह गुणवान अंहकार रहित हों।

नोट— उपरोक्त नियमों का पालन करने से उज्जवल तीव्र बुद्धि प्राप्त होगी और विद्वान् पंडित शास्त्री बनेंगे।

7. जिस गृहस्थ में स्त्री पुरुष एक दूसरे के प्रति अपना अंहकार व स्वार्थ त्याग दें तो गृहस्थ स्वर्ग बन जाता है वरना वह नरक बनेगा, तथा अय्याशी का अखाड़ा और दुःख धाम होगा।

गृहस्थी की उन्नति के चिन्ह

बाह्य :	शरीर	धन	गृह
	काया	माया	छाया
आन्तरिक:	कोमलता	समता	पवित्रता
	मन	बुद्धि	आत्मा

1. काया स्वस्थ व उन्नत होती है संयमी की। गृहस्थ में रहते हुए भी संयम करना। यह तप है। तपस्वी की देह सुदृढ़ होगी। संयम के कई विभाग आचार्य करते हैं। उनमें मुख्य है आहार, विचार, व्यवहार, आचार।

आहार संयम सर्वप्रथम कहा। पूज्य महर्षि दयानन्द जी महाराज ने संध्या हवन दोनों में अंग स्पर्श मंत्रों में वाक् इन्द्रिय की शुद्धि सबसे पहले रखी।

जो यह वाक् इन्द्रिय का संयम सिद्ध हो जाय, तो शुचि कार्य में बड़ी प्रगति हो जाए। आहार के द्वारा ही विचार आचार को सुधारा जा सकता है।

स्वास्थ्य के संबध में तो यह कहना होगा कि स्वाद के प्रति बेमेल, बेवक्त, हरवक्त अति अधिक, अतिकम खाने वाले का स्वास्थ्य बिगड़ता है। जितना हम पृथ्वी से उत्पन्न भोज्य पदार्थों को बिना बिगाड़े (उबाले) खाते हैं उतने सुखी और स्वस्थ्य रहते हैं। उतना हमारा वीर्य स्वबद्व रहता है। शरीर के अन्दर परिवर्तनशील ऋतुओं को सहन करने की सामर्थ्य रहती है।

2. **माया**– धन कमाई जितनी शुद्ध होगी, सत्य पर आधारित होगी अथवा अस्तेय चोरी से रहित होगी उतना उसका उज्जवल प्रभाव विचारों पर पड़ेगा। वह धन तेजस्वी बनायेगा एवं यज्ञ परोपकार में लगेगा तथा चिन्ता विमुक्त करने वाला होगा।

यदि अशुद्ध कमाई होगी, तो विचारों का सन्तुलन बिगड़ेगा, शान्ती चैन कभी प्राप्त नहीं होंगे। बाहरी आडम्बर रहने के बावजूद भी चिन्ताएं बढ़ती जायेगी। इस धन के बढ़ने पर आसक्ति, मोह बढ़ेगा। आध्यात्मिक पतन होगा। इसलिए सात्विक धन ही उन्नति का कारण है। भीष्म पितामह ने दुर्योधन का अन्न खाया इस कारण द्रोपदी पर अत्याचार हो रहा था, पर बोल नहीं पाये। इसी कारण कृष्ण जी ने दुर्योधन का अन्न अस्वीकार करके विदुर के घर साग खाया।

3. **छाया**– घर कितना सुन्दर सुखप्रद है यह प्रमाण है वैभव अथवा योग्यता का। घर के अन्दर केवल सुख के साधन है अथवा परमेश्वर पूजा का भी स्थान है, यज्ञशाला अतिथि गृह, स्वाध्याय के लिए स्थान इत्यादि, सदाचारी की आस्तिकता दर्शाते है।

घर में तीन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। खिड़की, मोरी, पतनाला

ब्रह्म यज्ञ खिड़की– बाहर से स्वच्छ वायु प्रकाश मेरे अन्दर आये। यह आते है सत्संग और स्वाध्याय से।

देवयज्ञ मोरी– नाली अन्दर का गन्दा पानी मैल रोज की रोज बाहर निकालती है। हमें यह कार्य प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण तथा स्वपरीक्षण द्वारा करना है वरना बीमारी आ जाएगी। अपने अन्दर न देखने से विषय वासनाएँ घर कर लेंगी, एक बार पक्की हो गई तो छूटना मुश्किल होगा।

विशेष यज्ञ पतनाला– वर्षा ऋतु में प्रयोग होता है इसका होना जरुरी है वरना छत बैठ जाएगी। राष्ट्र, देश, जाति के कल्याण के लिए गृहस्थी को चाहिए कि प्रतिदिन प्रयत्न करके अतिथि सेवा करें। इससे प्रकाश मिलेगा। पक्का अन्न अभ्यागतों को दान दिया करें, अत्तर के दोष जायेंगे। कभी–कभी वृहद यज्ञ किया करें इससे धन तेजस्वी बनेगा।

आर्य संस्कृति में उदारता को बड़ी महानता दी है। केवल अपना पेट पाला अथवा संतान आदि के सुखों के साधन जुटाए तो यह कोई मानवता नही। यहाँ तो महायज्ञों को प्रतिदिन करने का आदेश दिया गया है

बलिवैश्वदेव यज्ञ भी पंच महा यज्ञों का अंग है। इस यज्ञ में प्रत्येक बार खाने से पूर्व 7 ग्रास निकालने को कहा जाता है।

कीड़ी, कौवा, कुत्ता, कोढ़ी, कंगाल, कृतघ्न, रोगी का भाग निकालो वरना पाप ही खाओगे।

5. **हर कार्य से पूर्व प्रार्थना**— यह मानव जीवन का सार है, ध्येय है रुठे ठाकुर को मनाना। पुरुष को वश में करने के लिए स्त्री का आखिरी हथियार है आँसू, जो प्रेम में विह्वल होकर निकलें तो पत्थर को भी मोम बनाने की सामर्थ्य रखते है फिर उस प्रीतम के लिए तो सामवेद साक्षी देता है 'तरत्सम्मन्दी धावती'। जो उस प्यारे के पीछे अपनी देह आदि का मोह छोड़ देते हैं तो वह भी ऐसे मतवालों के लिए अपने सब नियम आदि ताक में रख देता है।

याद रखो उसकी बडी पैनी नजर है वह भाप लेता है हृदय की सच्चाई को। जहाँ उसे सच्चाई प्रतीत हुई कि उडेल देता है दया के दरिया को।

समता— पक्षपात रहित होना। यह पूर्व की बातों से कठिन है। पर हो सकेगी तब, जो प्रभु को घट—घट वासी मानो और जानो। धर्म के बड़े रोचक अर्थ आचार्य ने किये पर सबसे सुन्दर सरल अर्थ है 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'

पवित्रता— आत्मा तो पवित्र है ही, फिर इसकी पवित्रता कैसे करनी होगी। यह तो यथार्थ है कि आत्मा पवित्र है पर यह बंधन में पड़ जाती है जब अपने अन्दर देह बुद्धि बना लेती है। जहाँ अपने आप को देह माना बस वही से मोह शोक का अखाड़ा शुरु हो गया। इसी अज्ञान के कारण सब व्याधियाँ आकर लपेटती है। इसका निस्तारा भी तभी होगा जब अज्ञान को छोड़ ज्ञान का सहारा लेंगे।

परिवार का झगड़ा सास के साथ

—गोपाल भिक्षु वानप्रस्थ

अगर तुम सास हो और तुम्हारे चार बेटे हैं तो तुम्हें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि तुम्हारे चारों बेटों में तुम्हारा ही खून है और चार बेटे बचपन से ही इकट्ठे रहते आ रहे हैं। परन्तु तुम्हारी बहुओं का खून अलग—अलग है। इनके परिवार अलग—अलग हैं, यह चारों बचपन से जवानी तक अलग—अलग ही हैं, स्वभाव अलग—अलग है। आपस में मेल नहीं खाता। अब चारों को इकट्ठे रखना और चारों को जोड़े रखना तुम्हारा ही काम है। जैसे तुम्हारे लिये चारों बेटे हैं वैसे ही चारों बहुरानियां भी है। देवरानी और जेठानी में कई बार झगड़ा हो जाता है। वह दोनों ही शिकायत लेकर तुम्हारे पास आयेंगी। छोटी को समझाना होगा कि तेरा कर्तव्य है बड़ों की गलती बरदाश्त करना क्योंकि तू छोटी है। बड़ी बहू को समझाना होगा कि तू बड़ी है बड़ों का कर्तव्य है माफ करना इस तरह झगड़े को निपटाना होगा। अगर तू झगड़े में खुद ही शामिल हो गई, एक का पक्ष लिया और दूसरी को नाराज कर दिया तो झगड़ा खत्म नहीं होगा। फिर छोटी—छोटी बात को लेकर झगड़ा होगा आपकी बहूरानी अपने पति को तुम्हारे खिलाफ भड़का सकती है। जब भी परिवार में कोई गलती करे तो खुद शान्त रहना चाहिये और अगर कोई झगड़ा हो जाये तो कोई फैसला मत करना, झगड़े को टालते रहना। जब वातावरण शान्त हो तो अलग—अलग बातचीत करके झगड़े को निपटाना होगा।

Saturn Series

CPU Holder

Slide out Keyboard tray

Swivel and Tiltable keyboard tray

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055
Ph : 011-23540721. 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com
E-mail : delite@delitekom.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2015-17 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

MUNJAL SHOWA मुंजाल शोवा

मुंजाल शोवा लिमिटेड देश में टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योग में सभी प्रमुख ओ.ई.एम. के लिए शॉक एब्जोर्बर, फ्रंट फोर्क्स, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कंवेंशनल) और गैस स्प्रिंगो का सबसे बड़ा निर्माता है। निर्मित उत्पाद, गुणवत्ता और सुरक्षा के कड़े मानों के अनुरूप होते हैं। कम्पनी के उत्पाद बाधामुक्त, आरामदेह, चिरस्थायी, विश्वसनीय और सुरक्षित यात्रा के लिए जाने जाते हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, टीएस–16949, आईएसओ 14001, ओ.एच.एस.ए.एस. 18001 और टीपीएम प्रमाणित कम्पनी है। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

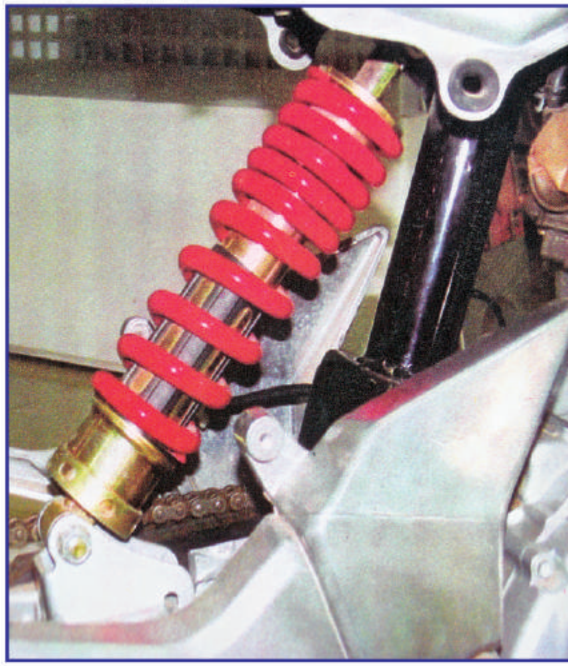

टीपीएम प्रमाणित कम्पनी

आईएसओ / टीएस–16949–2002 प्रमाणित

आईएसओ–14001 एवं ओएचएसएएस–18001 प्रमाणित

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

- हीरो मोटोकोर्प लिमिटेड
- मारुती सुजुकी इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा कार्स इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा मोटर साइकल एवं स्कूटर इन्डिया (प्र0) लिमिटेड
- इन्डिया यामहा मोटर (प्र0) लिमिटेड

हमारा उत्पादन

स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स

शॉक एब्जॉर्बर्स

फ्रन्ट फोर्कस

गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं0 9–11, मारुति इन्डस्ट्रीअल एरिया, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–2341001, 4783000, 4783100

प्लॉट नं0 26 इ एवं एफ, सेक्टर–3, मानेसर, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–4783000, 4783100

प्लॉट नं0 1, इन्डस्ट्रीअल पार्क–2, सालेमपुर गाँव, मेहदूद–हरिद्वार, उत्तराखण्ड दूरभाषः 0124–4783000, 4783100

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com